

नेहरू चित्रावली

हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर

Mr. Y. Murahari Rao.

नेहरू-चित्रावली

(पं० नेहरूजी के बचपन से लेकर वर्तमान समय तक के ९० चित्र, उनकी जीवनी, उनके विचार आदि बातों का संग्रह)



बापू के उत्तराधिकारी

लेखक तथा प्रकाशक

जीतमल लूणिया, संचालक

हिन्दी साहित्य मन्दिर, अजमेर

सरी बार
न् १९५६

अपने साथियों से कहिए कि वे भी ... ख़रीदें

मूल्य प्रचारार्थ १)

नम्र निवेदन

इस चित्रावली-माला में अबतक 'गांधी चित्रावली' तथा 'विनोबा चित्रावली' ये दो पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। अब यह तीसरी पुस्तक पाठकों की सेवा में भेंट की जा रही हैं। इसके चित्रों के संकलन में मुझे भारत सरकार के प्रेस इन्फ़ोरमेशन ब्यूरो, पंजाब फ़ोटो सर्विस दिल्ली, लीडर प्रेस और लॉ जनरल प्रेस प्रयाग, आदि से विशेष सहायता मिली है, इसके लिये मैं इन सबका अत्यन्त आभारी हूँ। इसके अलावा इस पुस्तक की तैयारी में श्री विष्णु प्रभाकर, श्री यशपाल जैन, श्री मार्तण्ड उपाध्याय से भी बड़ा सहयोग मिला है, इसके लिए मैं इनका भी बड़ा आभार मानता हूँ।

तीसरा संस्करण

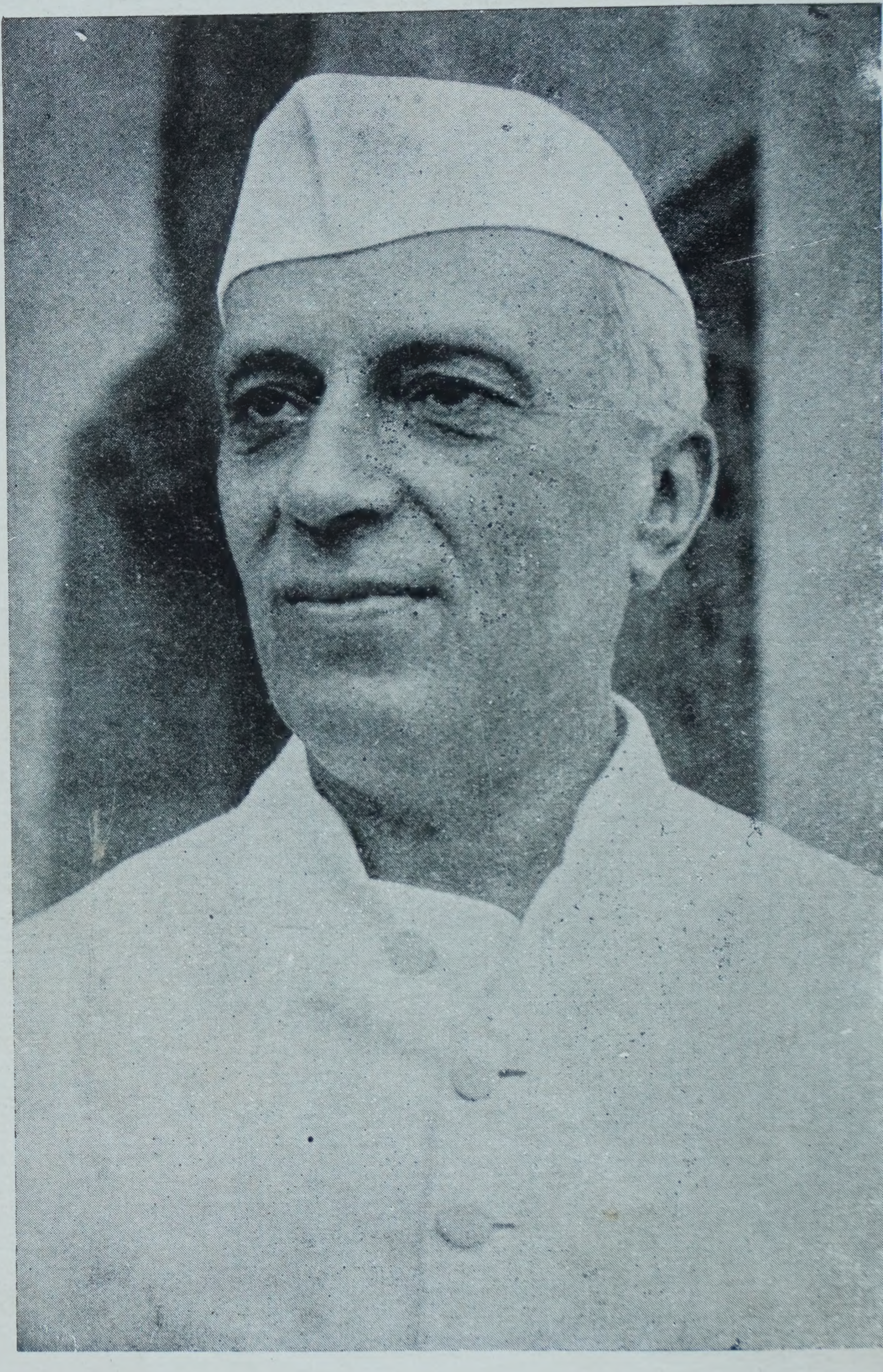
बड़े हर्ष की बात है कि थोड़े ही समय में पुस्तक का पहला व दूसरा संस्करण समाप्त हो गया और अब यह तीसरा संस्करण पाठकों के हाथों में पहुँच रहा है। इसमें इस बार कई नये चित्र भी जोड़ दिये गये हैं। पिछले संस्करण में पंडितजी के चीन यात्रा के ही चित्र थे पर इसमें रूस यात्रा तक के चित्र दे दिये गये हैं। रूस यात्रा के चित्रों में रूस की एम्बेसी से तथा स्टेट फ़ाइन आर्टस पब्लिशिंग हाउस मोस्को से प्रकाशित पुस्तक से चित्र लिये गये हैं, उसके लिए मैं उनका बड़ा कृतज्ञ हूँ।

जीतमल लूणिया

मुद्रक—अर्जुनसिंह बी. ए. राजस्थान आर्ट प्रिंटर्स, अजमेर।
प्रकाशक—जीतमल लूणिया हिन्दी साहित्य मंदिर, अजमेर।



(१) बापू के उत्तराधिकारी



(२) नेहरू ६७ वें वर्ष में—१४ नवम्बर १९५५

नये एशिया के जननायक, भारत के गर्वोन्नत भाल
विश्व शांति के प्रबल समर्थक, जुग-जुग जिएं जवाहरलाल



(३) जवाहरलाल नेहरू : एक वर्ष की आयु में
जन्म १४ नवम्बर १८८९—मार्गशीर्ष बदि ७ संवत् १९४६
कौन जानता था कि यह नन्हासा बालक किसी रोज़ भारत का ही नहीं
बल्कि विश्व का एक महान् पुरुष बनेगा



(४)

ट्राइसिकल पर

पाँचवां वर्ष: सन् १८६४



(५) सलोना रूप

सातवां वर्षः सन् १८६६



(६) बहन-भाई

सरूपकुमारी (विजयालक्ष्मी) और जवाहरलाल



(७)

माँ-बेटा

माता स्वरूपरानी अपने लाड़ले बेटे के साथ



(८) किशोर जवाहर
उपनयन-संस्कार के समय



(६) नेहरू परिवार

बाँईं ओर से (माता) स्वरूपरानी, गोद में कृष्णा (बहन) खड़े हुए
पं० मोतीलालजी (पिता) बहन सरूप कुमारी (विजयालक्ष्मी)
को लिये हुए जवाहरलालजी



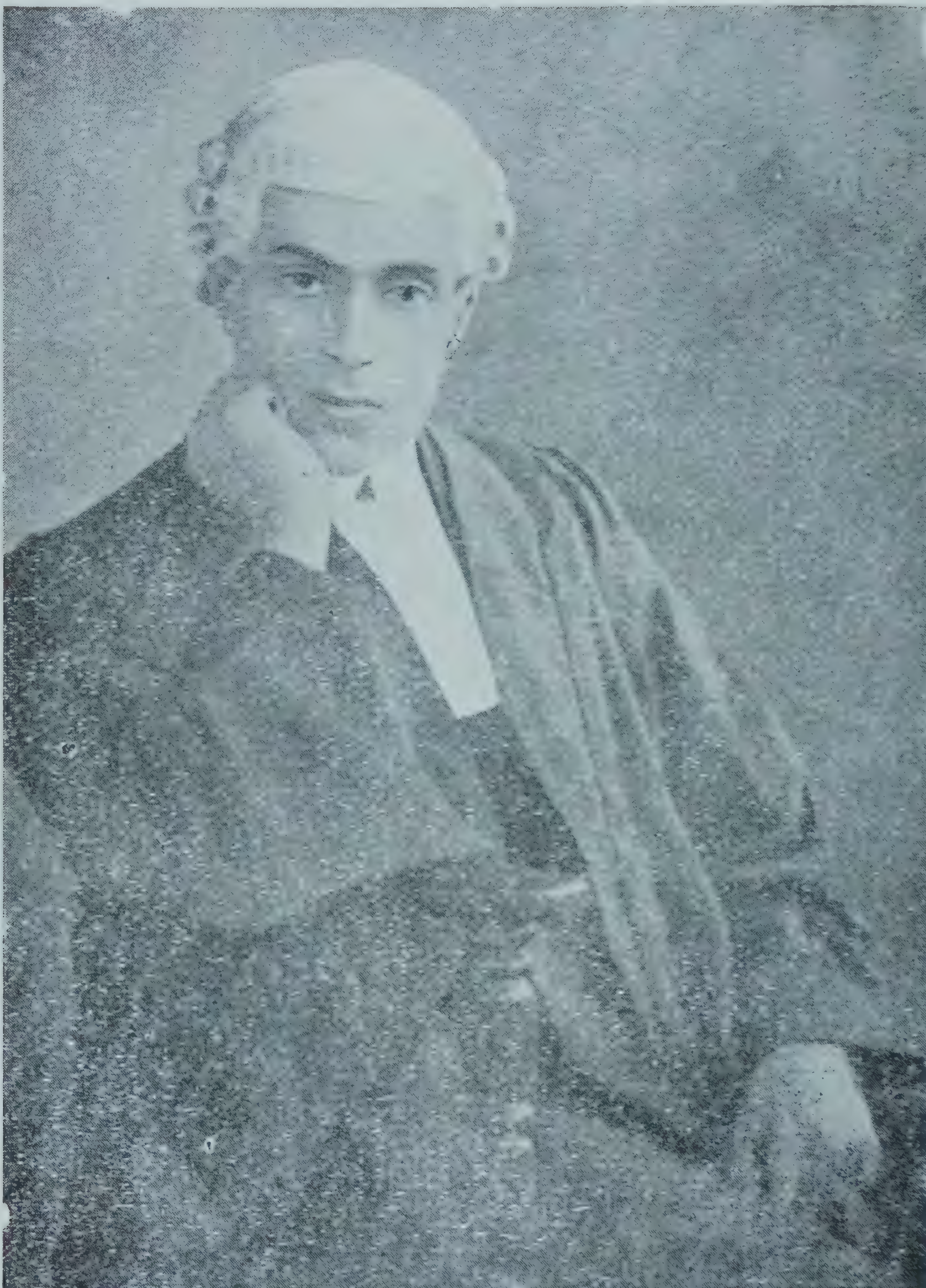
(१०) हैरो के विद्यार्थी : सन् १९०७

विलायत में शिक्षा प्राप्त करते हुए अंग्रेजी वेशभूषा में



(११) कर्त्तव्य के पथ पर

इंगलैंड के शिक्षा-काल में हैरो केडेट कोर में



(१२) बेरिस्टर जवाहरलाल : सन् १९१२



(१३) जीवन का नया अध्याय : सन् १९१६
विवाह के समय : जवाहरलाल और कमला



(१४) गांधीजी के प्रभाव में : सन् १९१७

अंग्रेजी वेशभूषा छोड़ कर असहयोगी बन गये



(१५) कांटों का ताज पहना

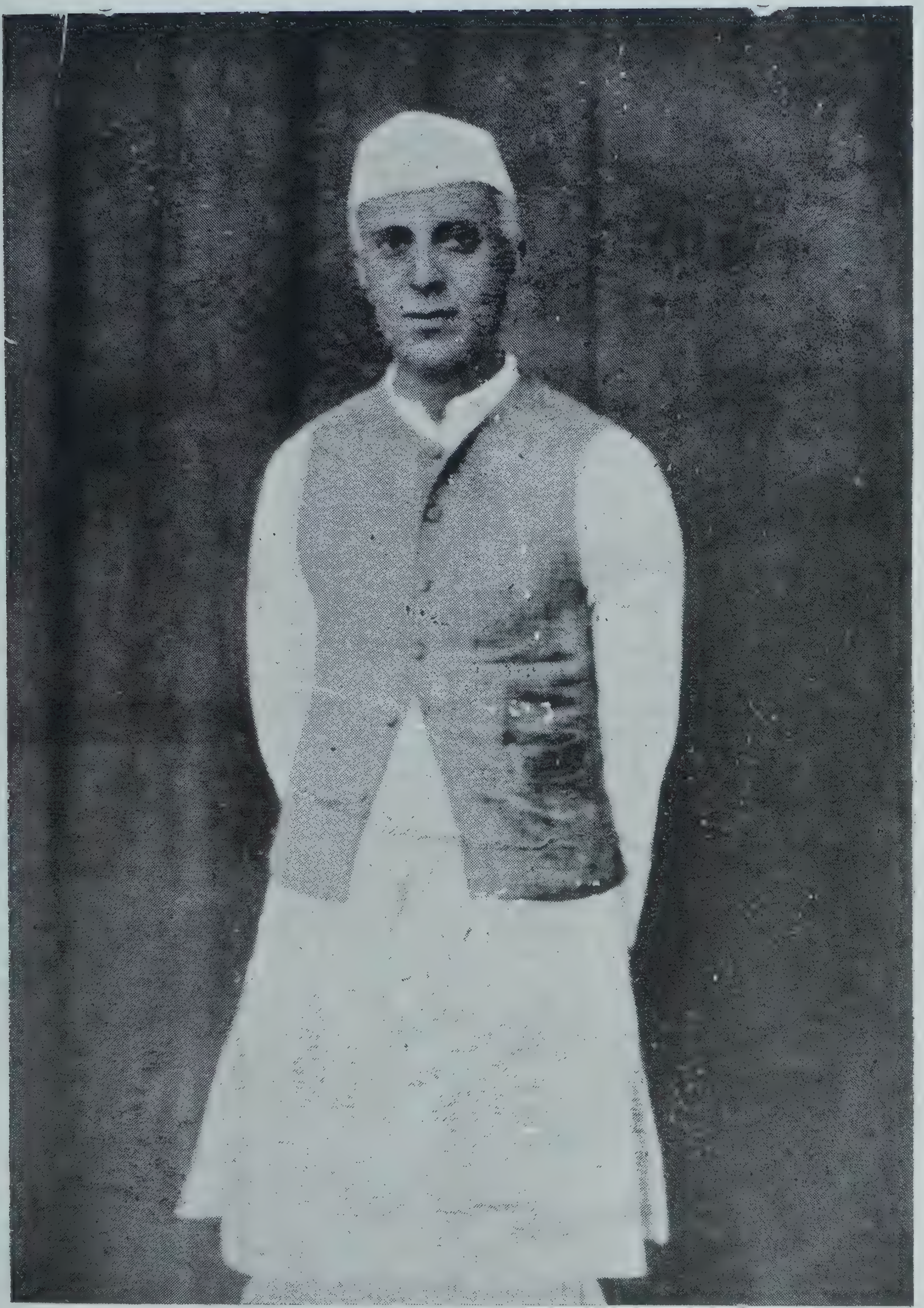
सन् १९२९ में लाहौर कांग्रेस के सभापति

इसी अधिवेशन में पूर्ण स्वतन्त्रता का प्रस्ताव पास हुआ था



(१६) सारा परिवार देशप्रेम में डूब गया

कमला नेहरू (पत्नी) : जवाहरलाल : इन्द्रा गांधी (पुत्री)

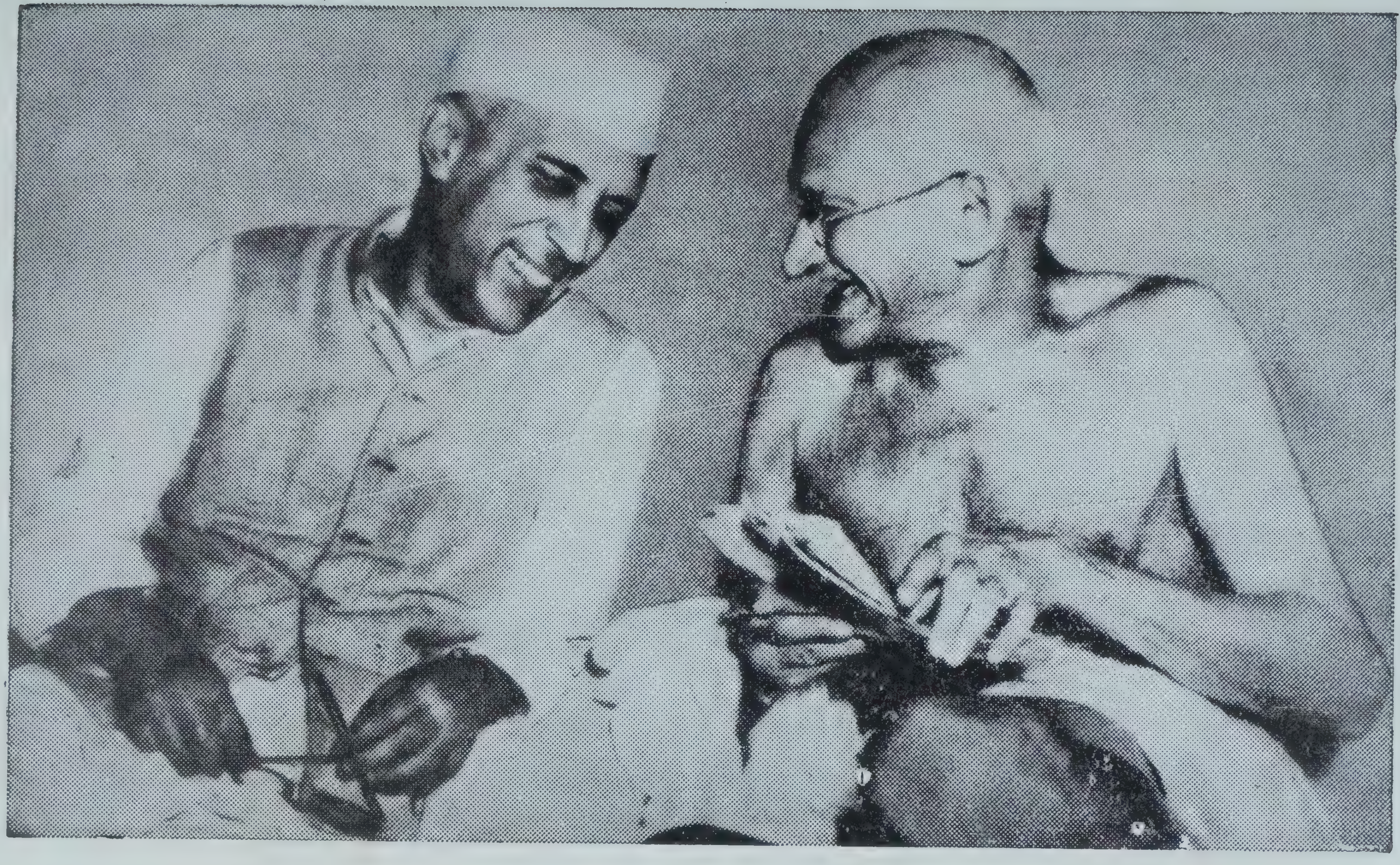


(१७) पुनः कांग्रेस के सभापति : सन् १९३६ लखनऊ में



(१८) "मैं जानता हूं कि जब मैं चला जाऊंगा तो जवाहरलाल मेरी भाषा बोलेगा"

—ग



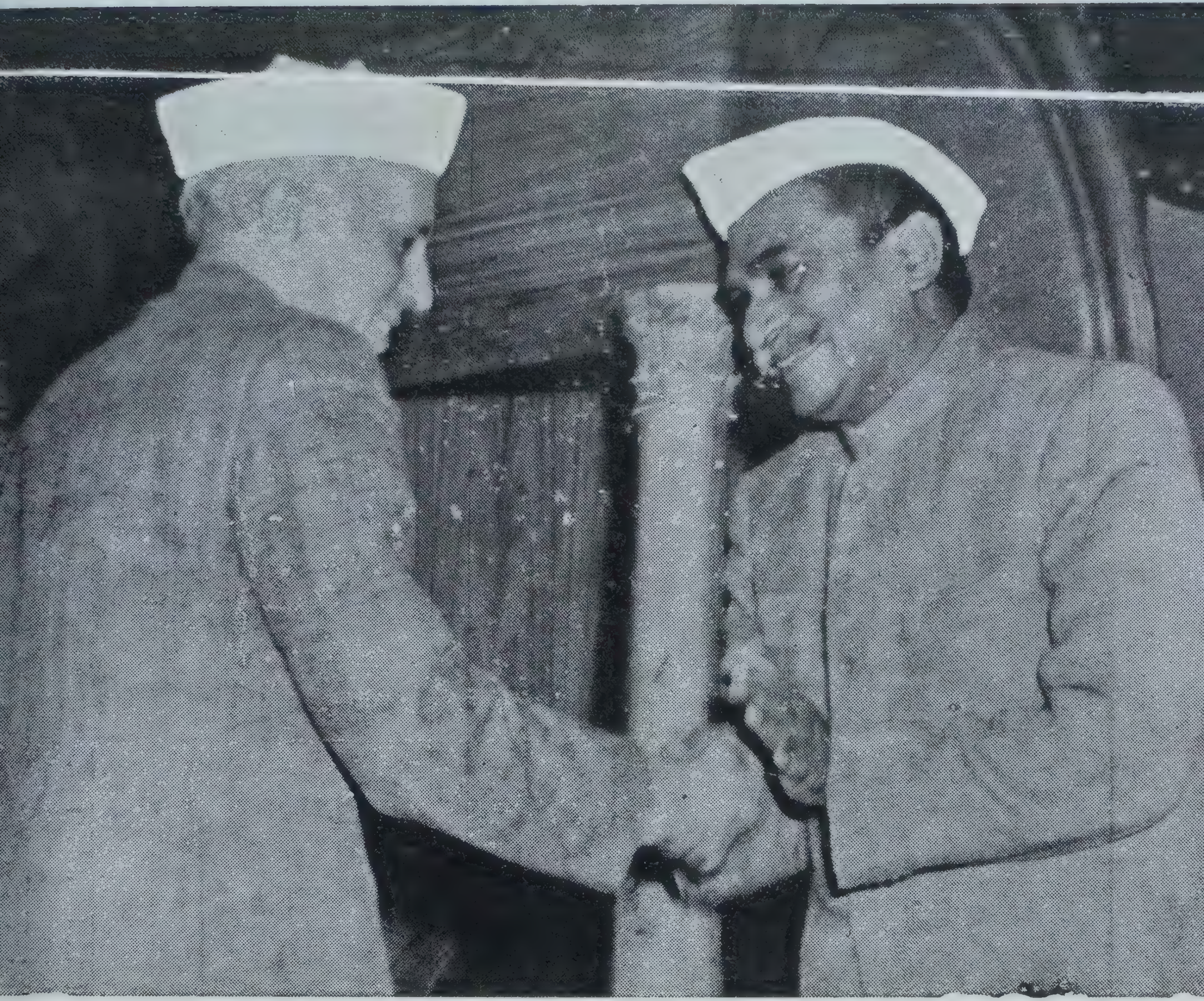
(१६) बापू अपने उत्तराधिकारी प्यारे जवाहर के साथ



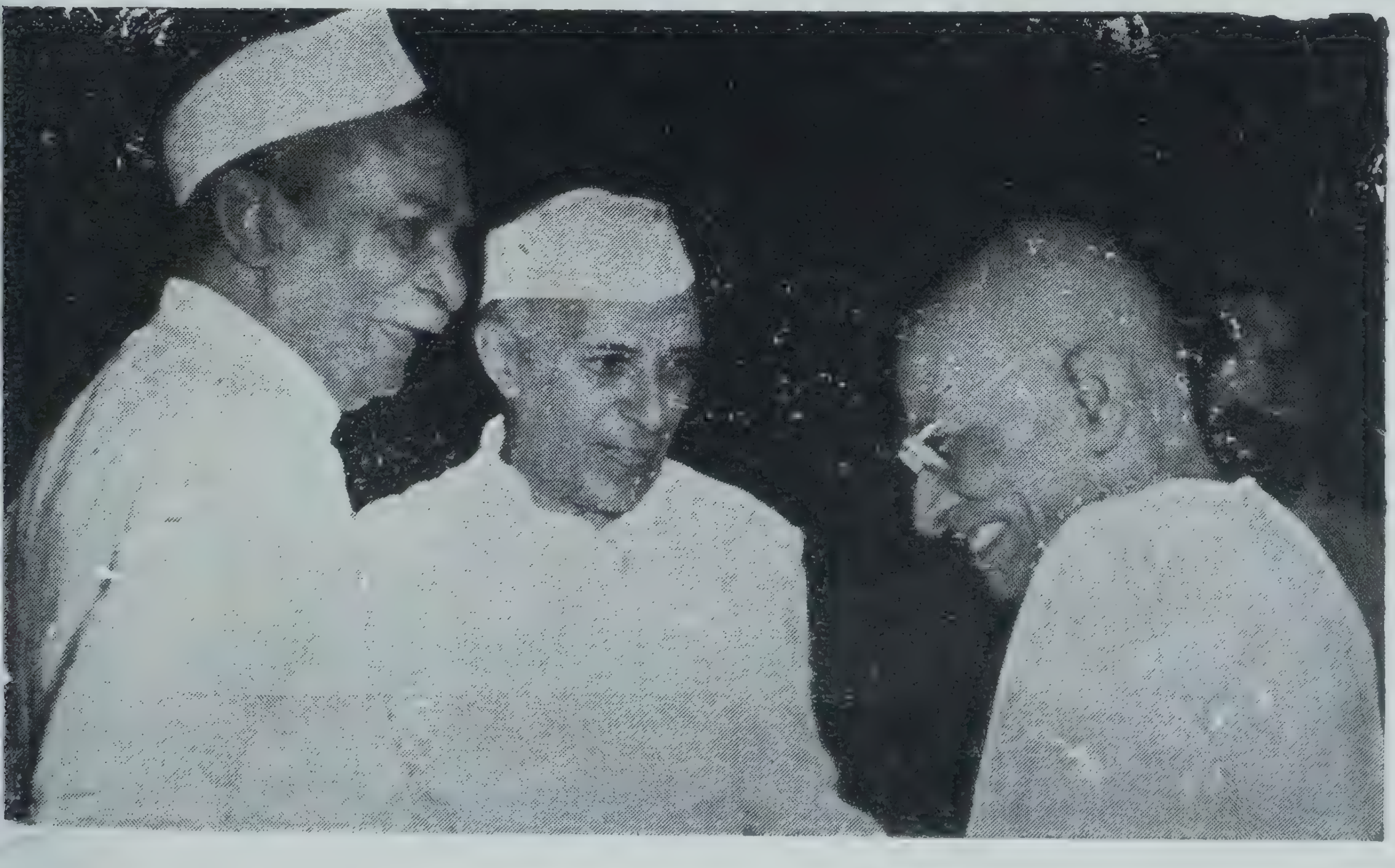
(२०) महामना मालवीयजी से अन्तिम भेंट



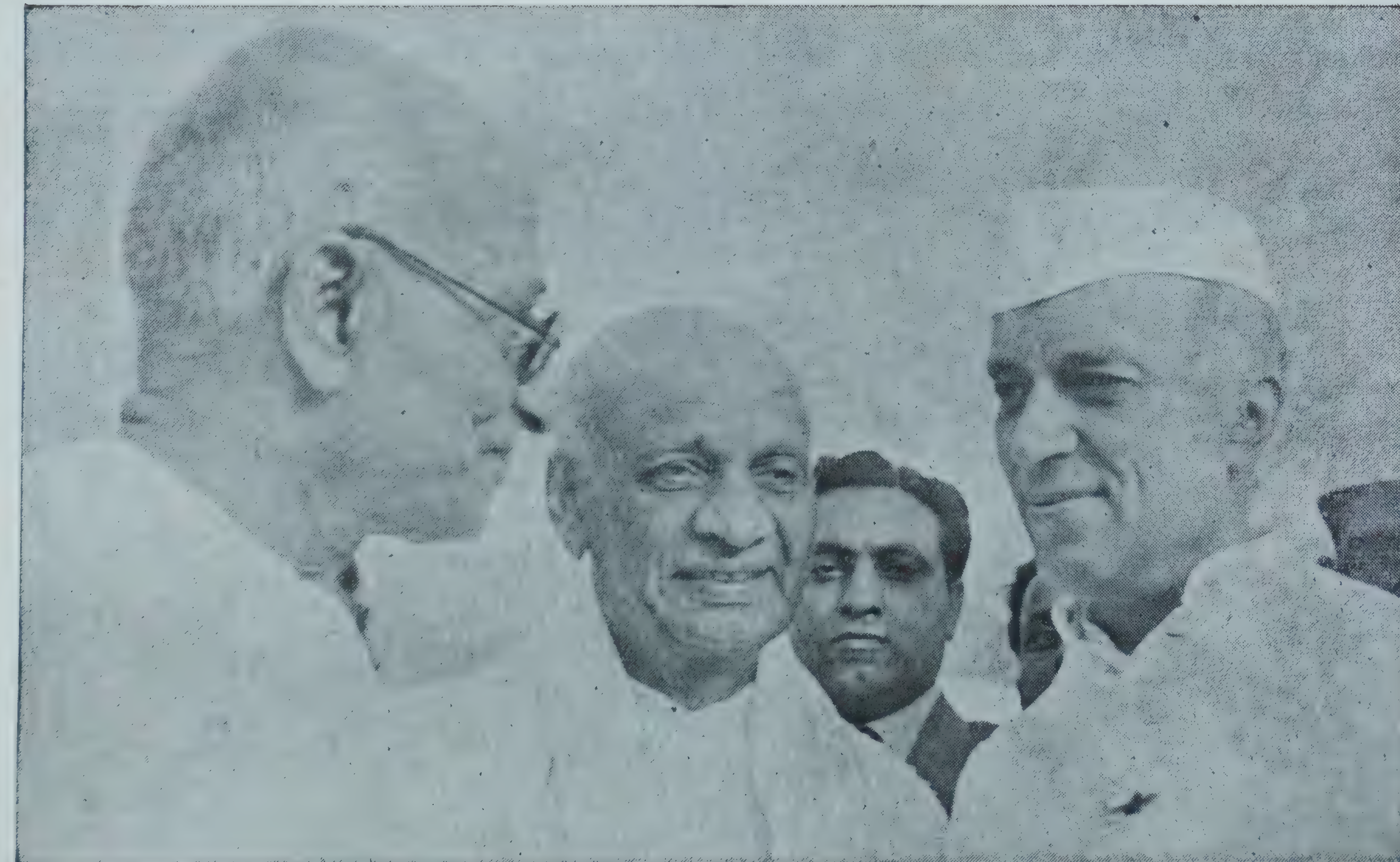
(२१) सरहदी गांधी अब्दुल गफ्फारखां के साथ



राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसादजी के साथ : प्रसन्न मुद्रा में

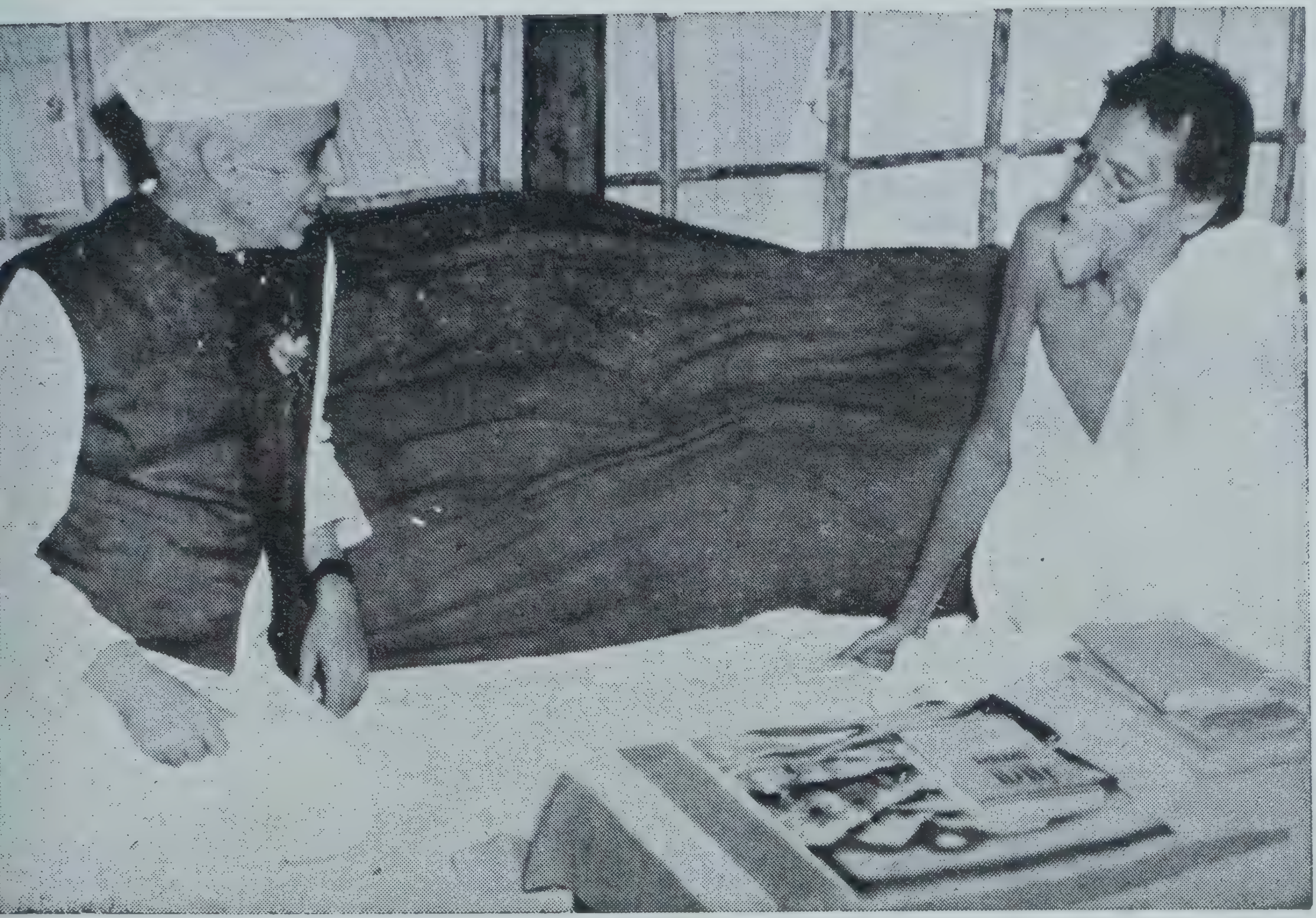


 राजेन्द्र बाबू और राजाजी के साथ

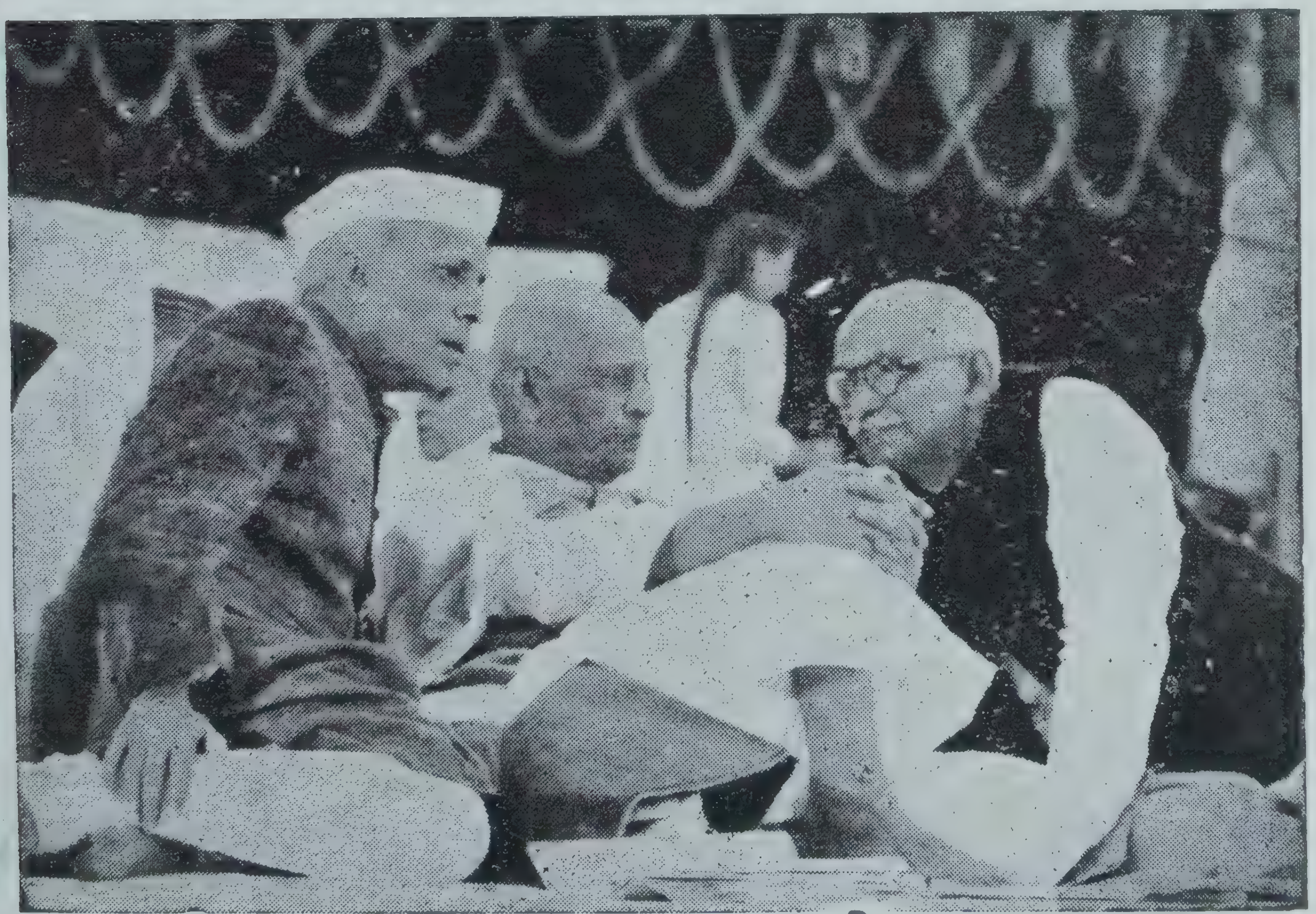


(२४) त्रिमूर्ति: स्वाधीनता-संग्राम के तीन सेनानी

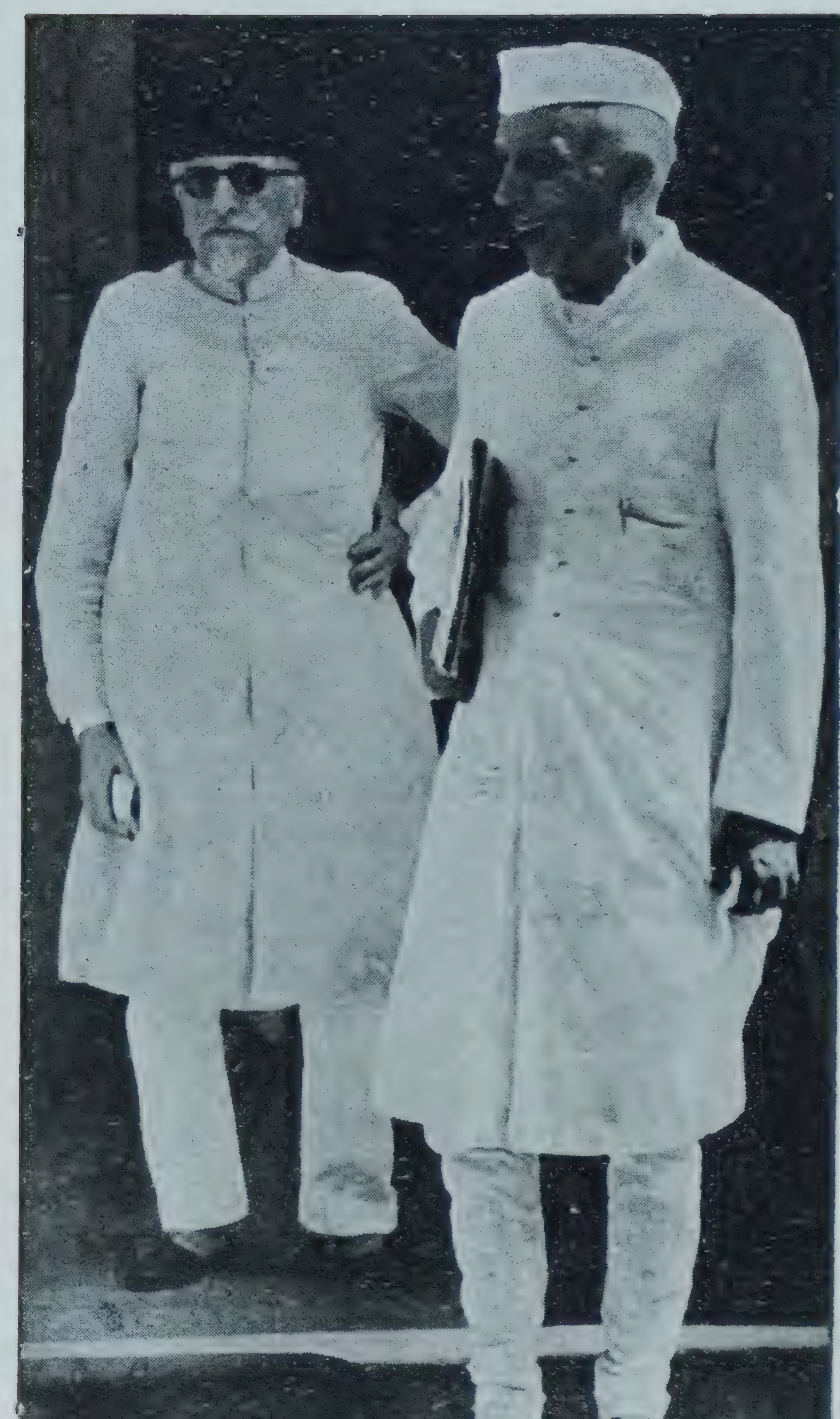
राजाजी : सरदार : जवाहर



(२५) संत विनोबा के साथ



(२६) पंडित नेहरू, सरदार, पट्टाभि गंभीर विचार में



(२७) केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री मौलाना आज़ाद के साथ



(२८)

केन्द्रीय मंत्री मंडल

बीच में राष्ट्रपति राजेन्द्रप्रसाद तथा उपराष्ट्रपति राधाकृष्णन



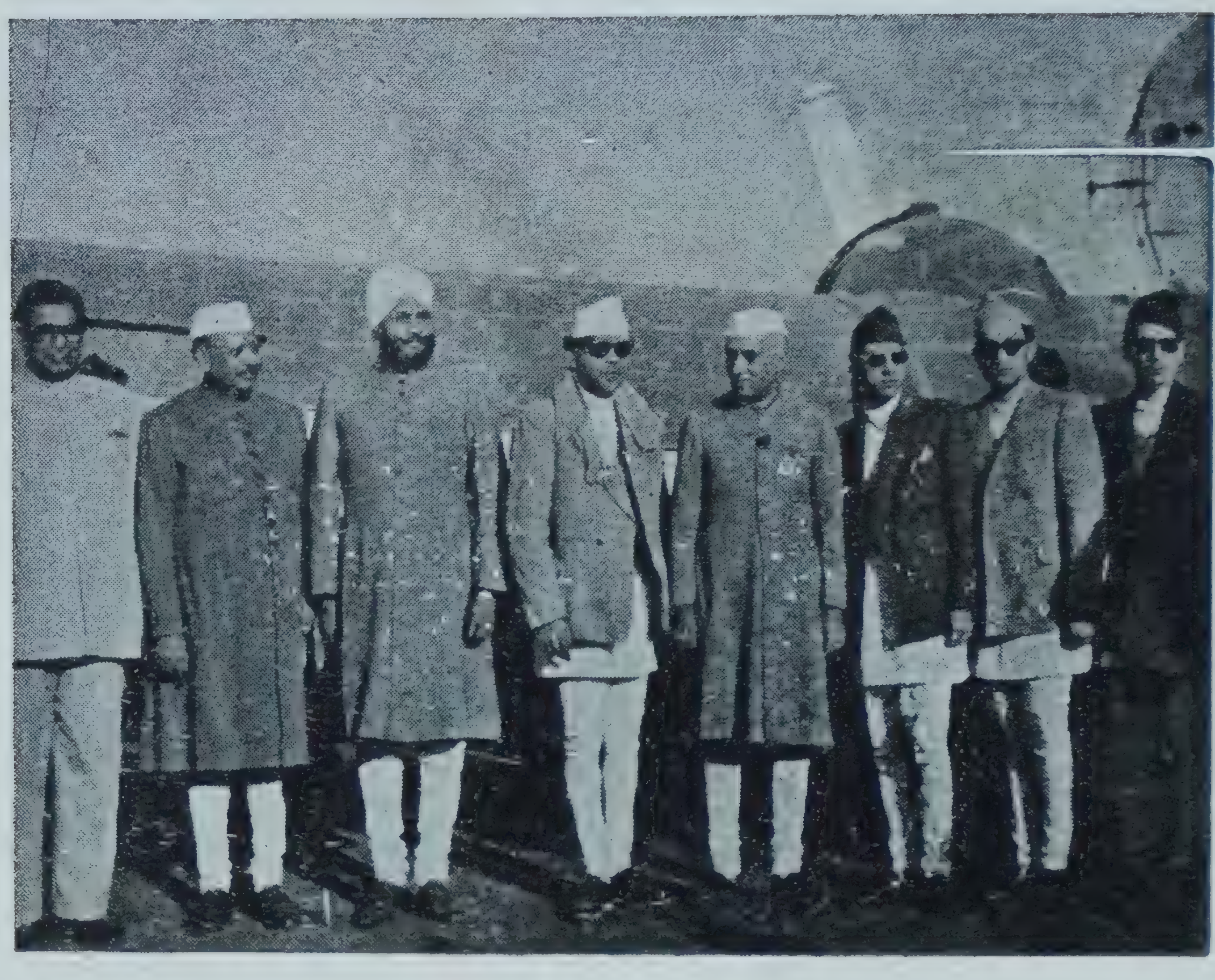
(२६) हरिजन आश्रम साबरमती के कार्यकर्त्ताओं के साथ



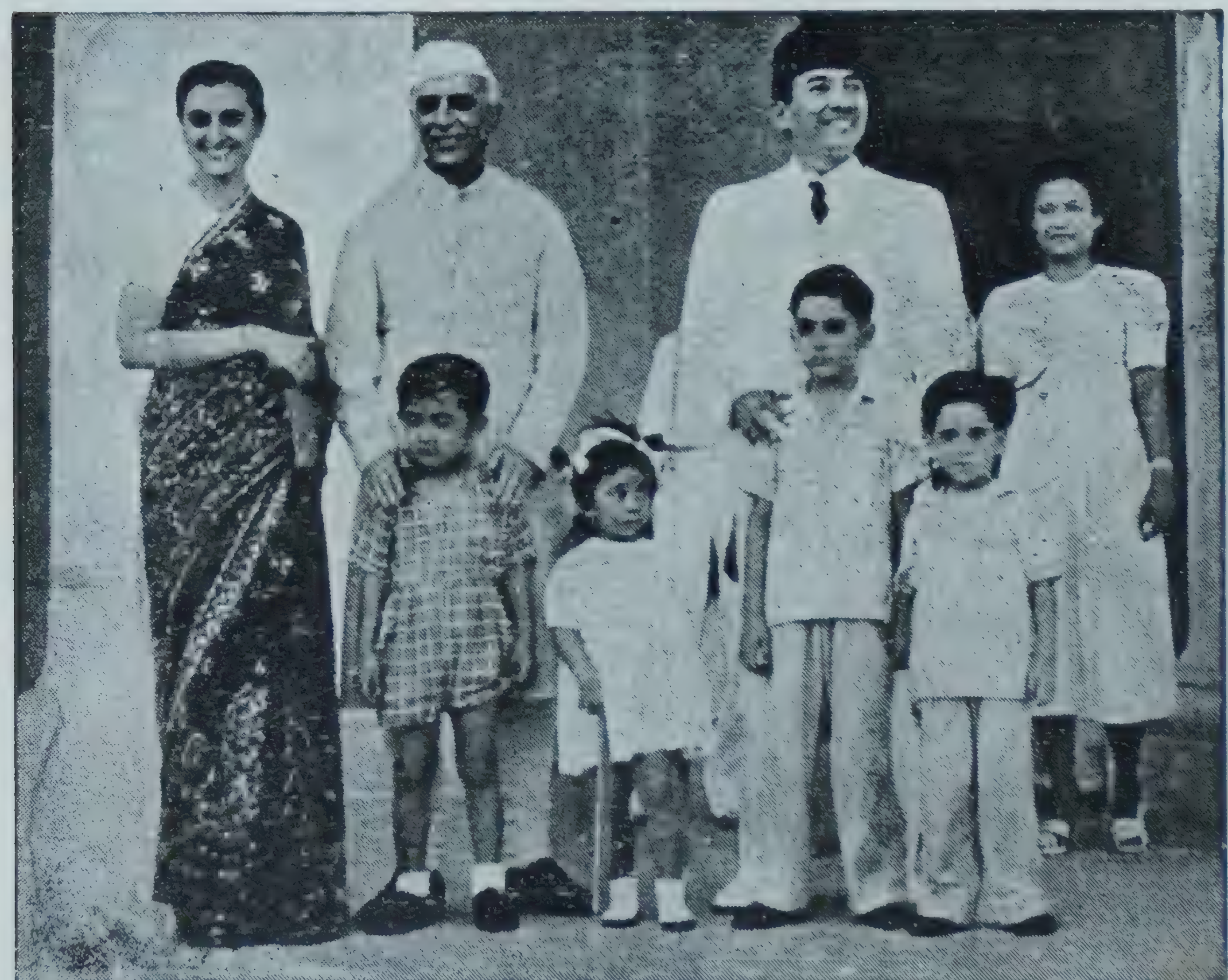
(३०) निज़ाम हैदराबाद के साथ



(३१) माईसोर के महाराजा के साथ



(३२) नैपाल के राणा के साथ



(३३) इन्डोनेशिया के प्रधान मंत्री के साथ



(३४) सिक्किम के महाराजा के साथ



[illegible] अफ़गानिस्तान के प्रधान मंत्री के साथ



(३६) लद्दाख में : जैसा देश वैसा भेष



(३७) बर्मा के प्रधान मंत्री थाकिननू के साथ

राजनेताओं के साथ—विदेश में



(३८) मिश्र में स्वागत



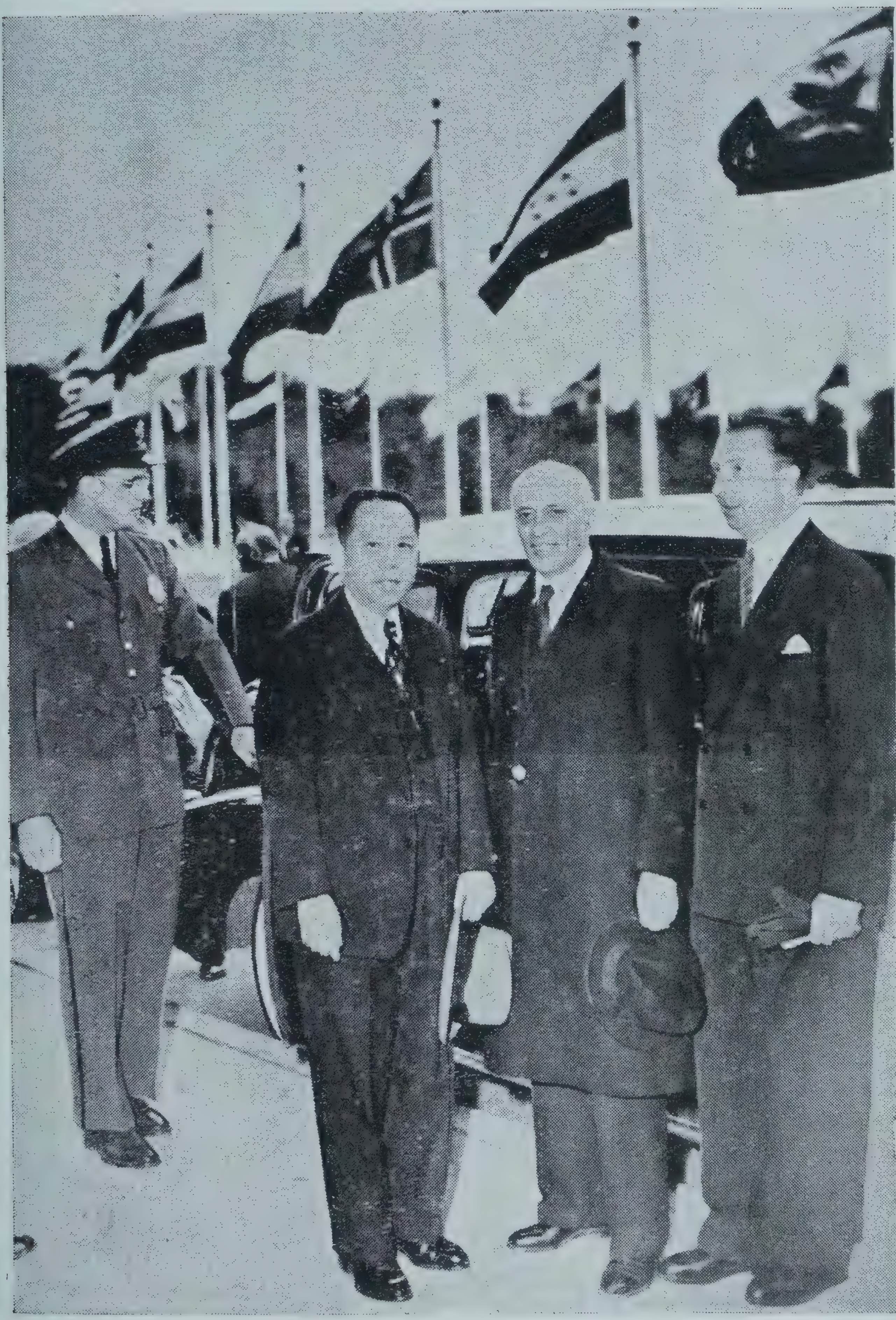
(३९) आयरलेण्ड के प्रेसिडेंट के साथ



(४०) अमेरिका के भूतपूर्व प्रेसीडेंट ट्रूमैन के साथ



(४१) अमेरिका के वर्तमान प्रेसीडेंट आइजनहोवर के साथ



(४२) लेकसक्सेस में



(४३) चीन की भूमि पर

पेकिंग (चीन की राजधानी) के हवाई अड्डे पर स्वागत
दाईं ओर चीन के प्रधान मंत्री चाऊ एन लाई खड़े हैं



(४४) बच्चों द्वारा स्वागत

पं० नेहरूजी को हवाई अड्डे पर बच्चे माला पहना रहे हैं



(४५) दो राष्ट्रोंके कर्णधार

हवाई अड्डे से चीन और भारत के प्रधान मंत्री मोटर से शहर को जा रहे हैं। पाँच मील तक लोगों की कतार पंडितजी का स्वागत कर रही है



(४६) प्रेम की वर्षा

पेकिंग की जनता ने पंडितजी को चारों ओर से घेर लिया है



(४७) दो राष्ट्रों के उन्नायक

चीनी गणतन्त्र के चेयरमैन (राष्ट्रपति) माऊत्सेतुंग पंडितजी का स्वागत कर रहे हैं



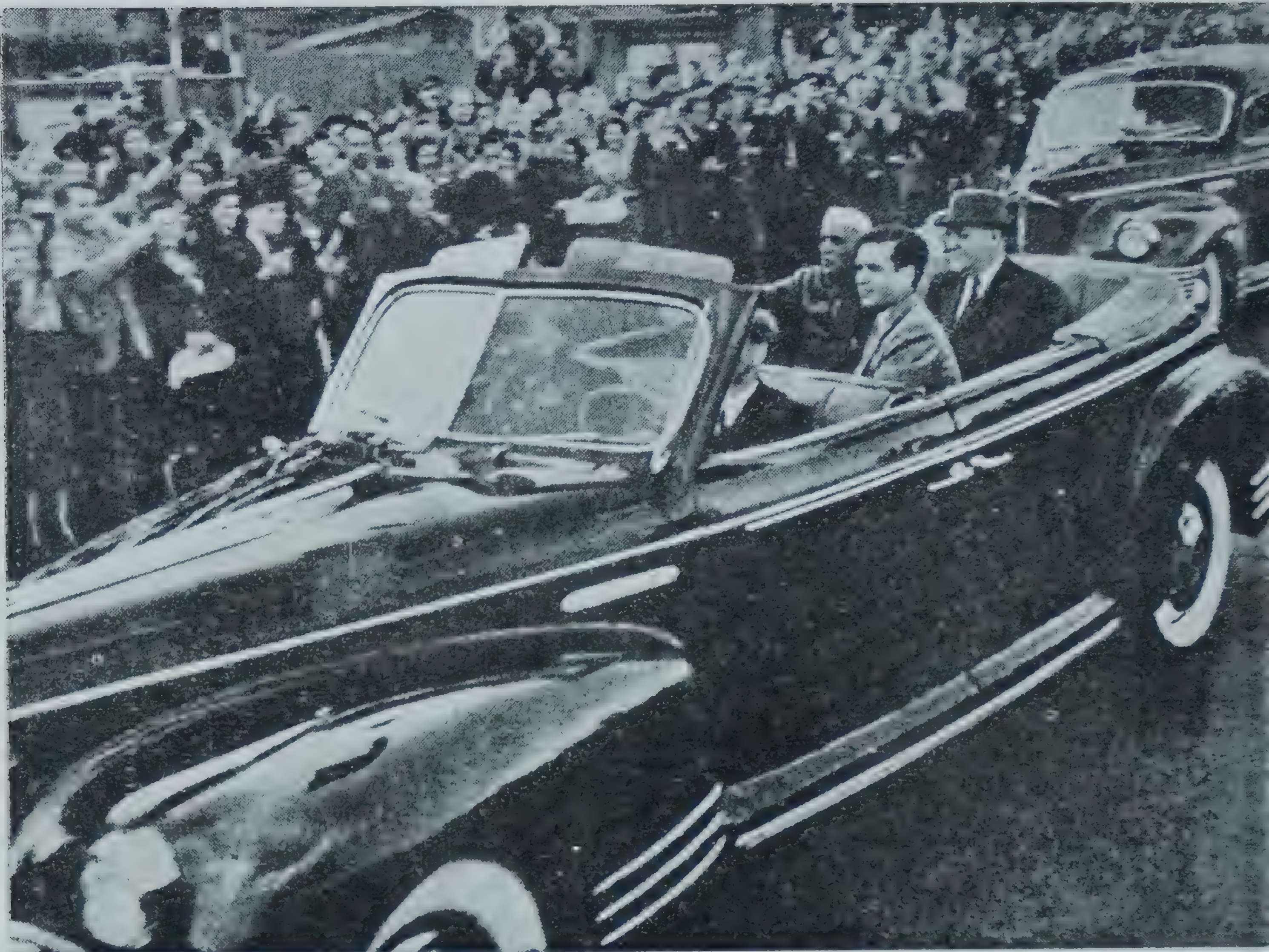
(४८) जनता द्वारा अभिनन्दन

पेकिंग के मेयर पेंगचेन पेकिंग की जनता की ओर से पंडित नेहरूजी को मानपत्र व तोहफ़े भेंट कर रहे हैं



(४६)

रूस की भूमि पर
पं० नेहरू ७ जून १९५५ को मोस्को (रूस की राजधानी) पहुंचे
हवाई अड्डे पर उनका अभूतपूर्व स्वागत
पास में रूस के प्रधान मंत्री श्री बुलगानिन तथा अन्य नेता खड़े हैं



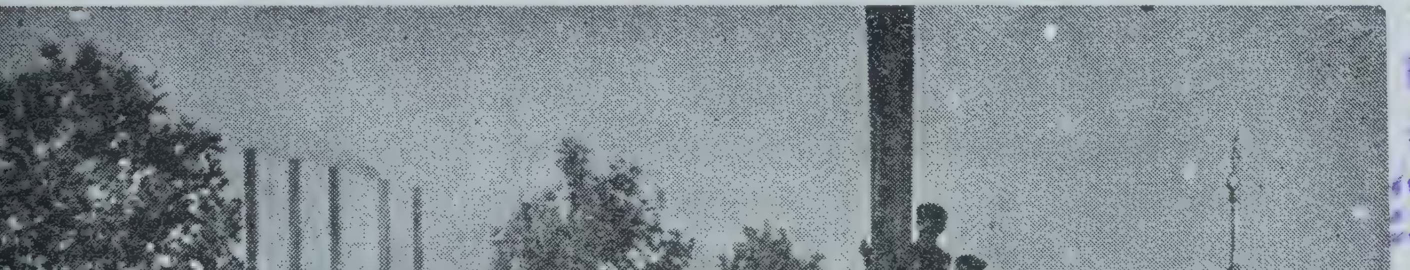
(५०) मास्को शहर में भव्य स्तागत



(५१) सारी जनता उमड़ पड़ी है। हाथ जोड़ कर स्वागत कर रही है



२)   नहरूजी कृषि प्रदर्शनी में : बाईं ओर इंदिरा गांधी हैं
नेहरूजी जहां भी जाते हैं, जनता की अपार भीड़ उनके पीछे हो लेती है



३)   मजदूर भाई बहन पंडितजी का स्वागत कर रहे हैं



(५४) उजबेक प्रांत के किसान अपनी पोशाक नेहरूजी को पहना रहे हैं

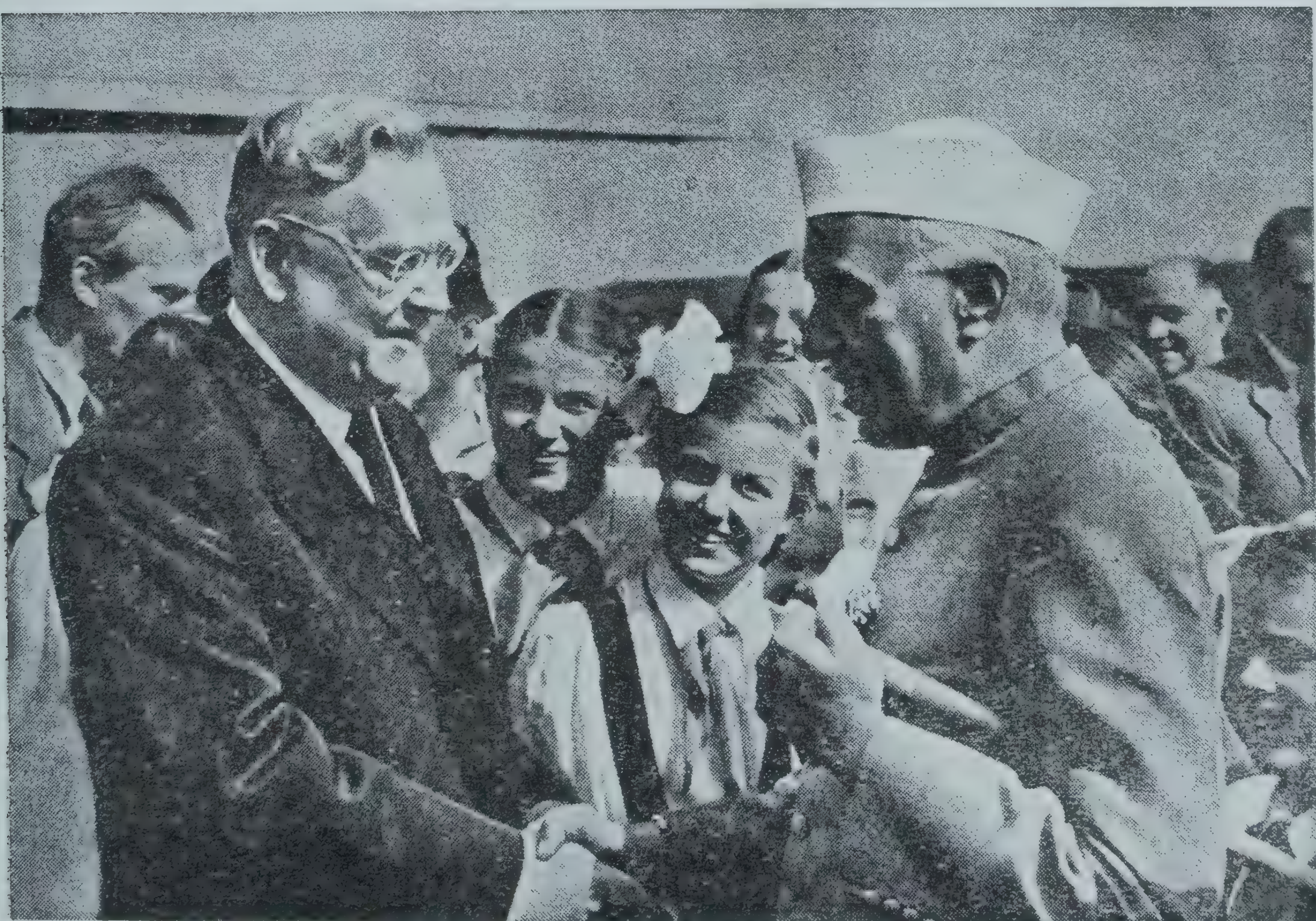


(५५) बच्चों के बीच



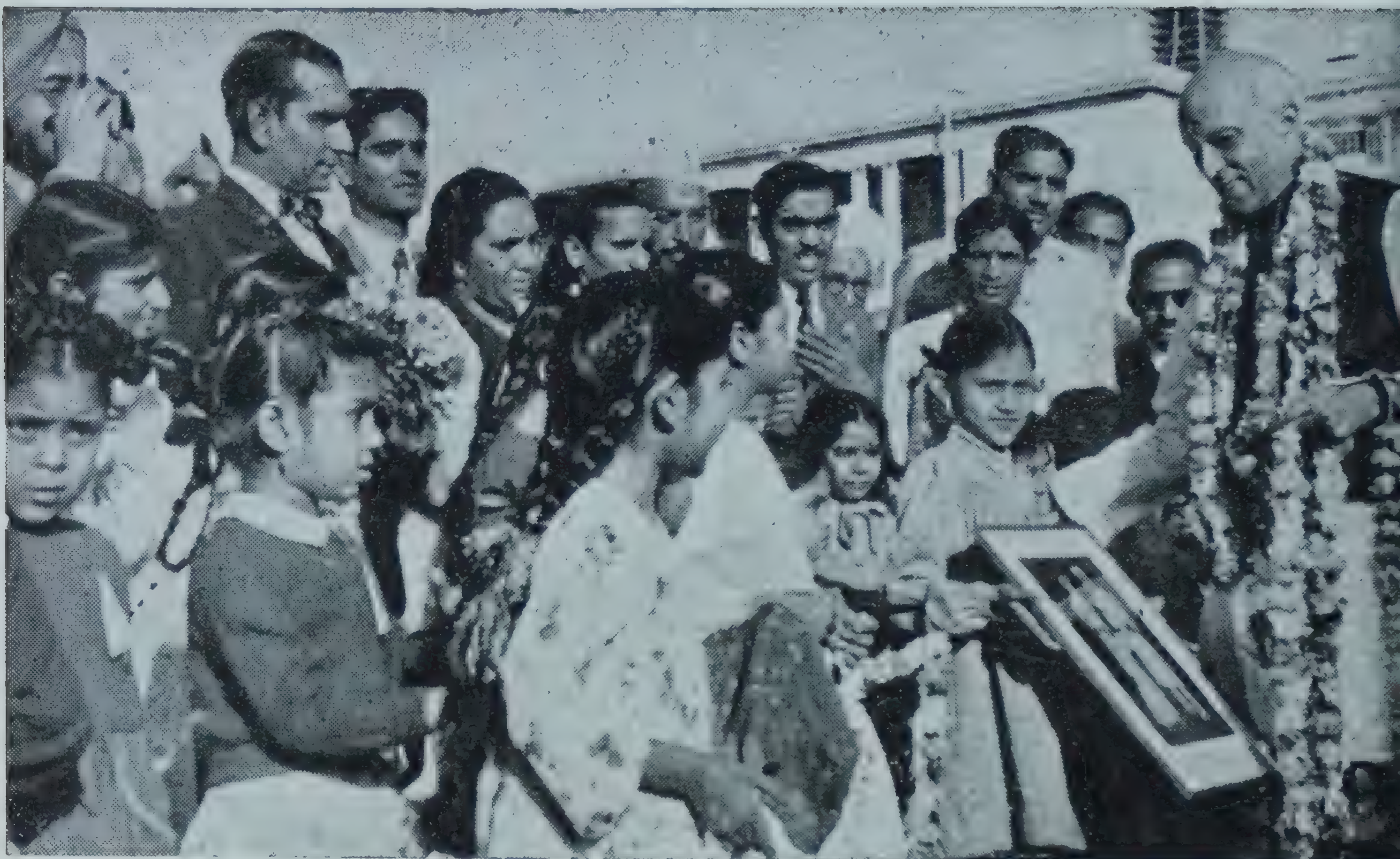
(५६) रूसी, हिन्दी, भाई भाई

रूस और हिन्दुस्तान की अटूट मैत्री पर दोनों नेता पं० नेहरू और बुलगानिन भाषण दे रहे हैं



(५७) रूस से बिदाई

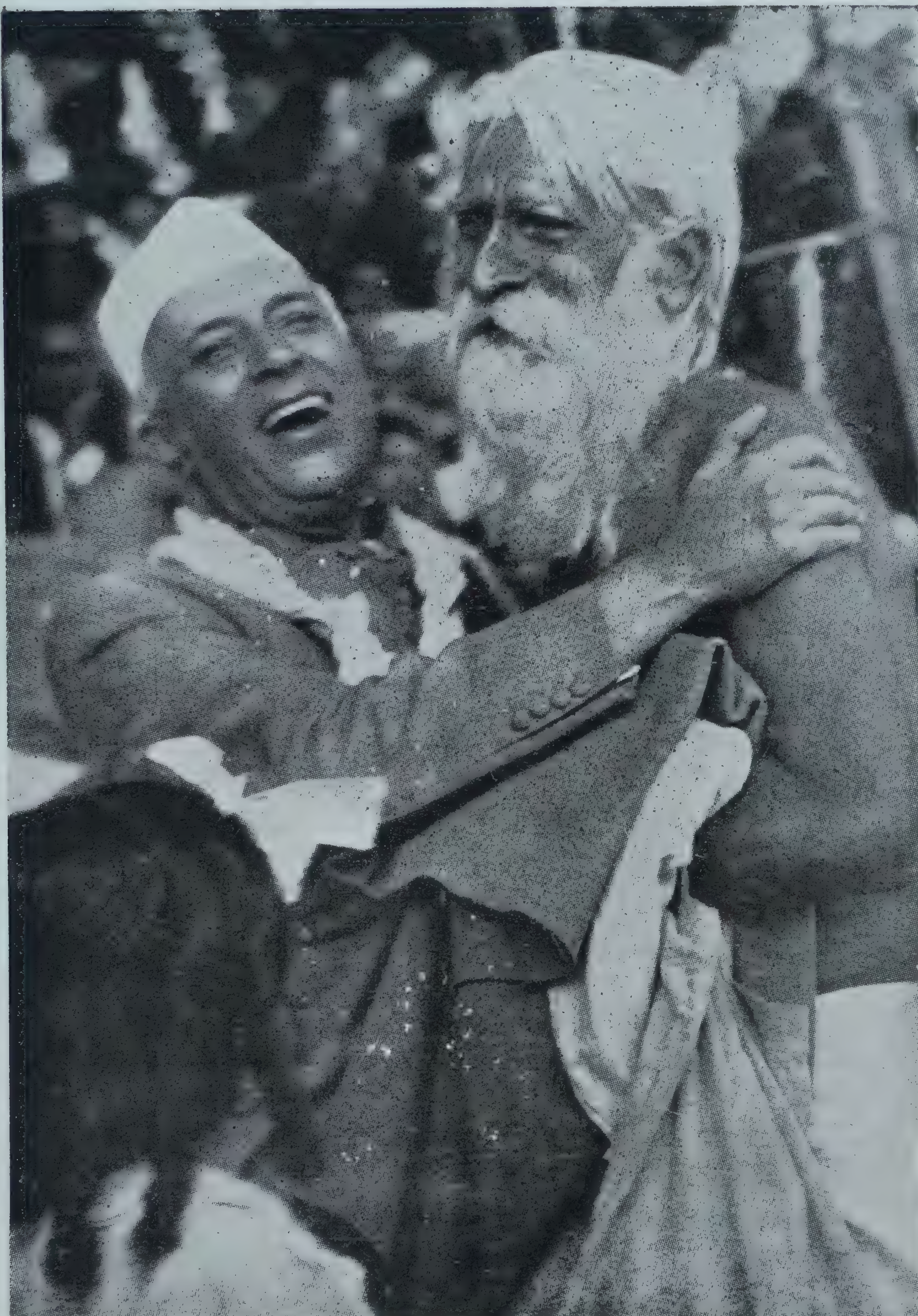
हवाई अड्डे पर बिदाई के समय नेहरूजी बुलगानिन से हाथ मिला रहे हैं



(५८) वर्षगांठ पर बच्चे मानपत्र दे रहे हैं



(५९) वर्षगांठ पर बच्चों के बीच

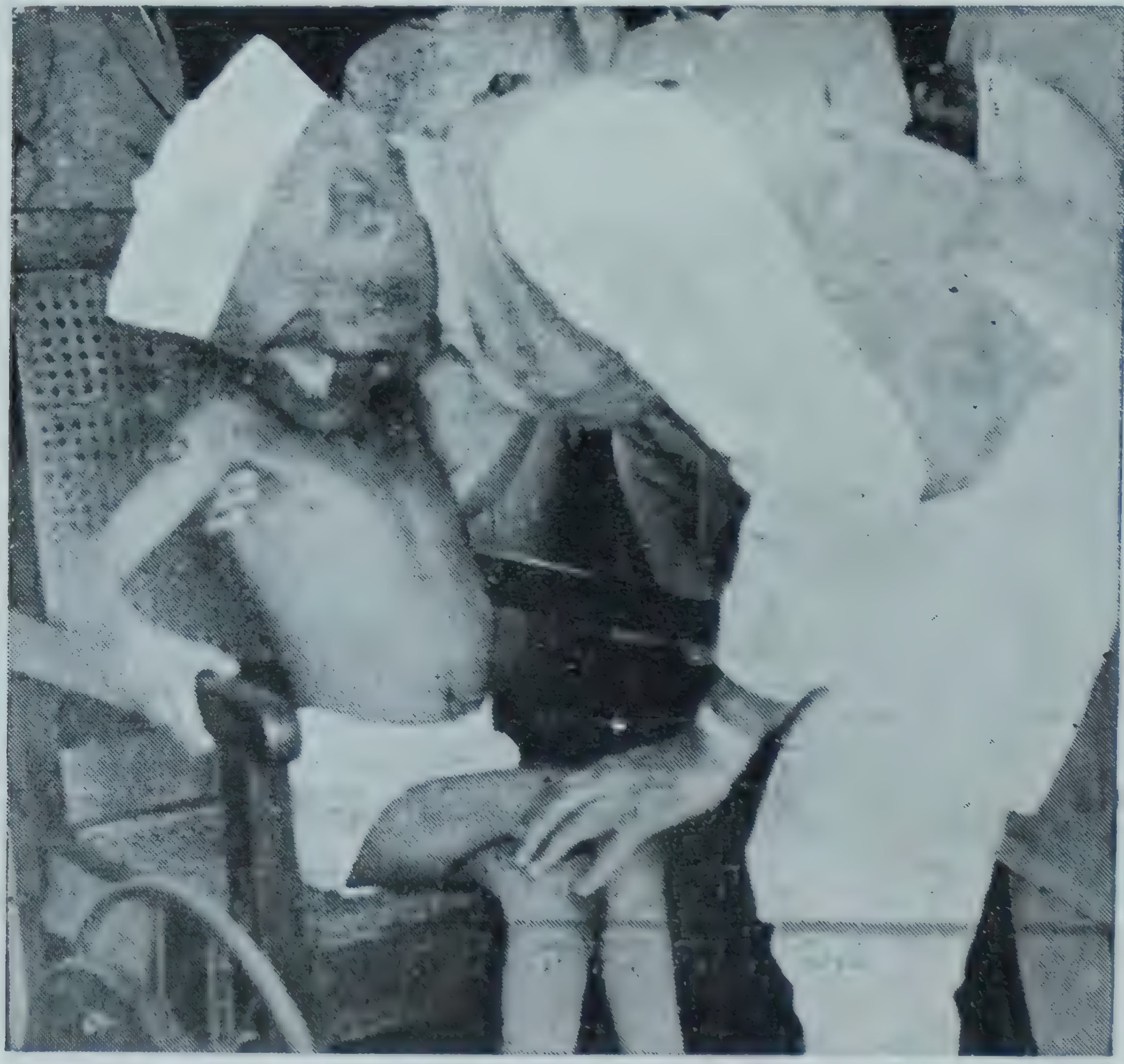


(६०) सहृदयता का हृदयस्पर्शी दृश्य

नेहरूजी अपने जन्म-दिवस पर दूर गांव से आए हुए एक ग्रामीण वृद्ध को अंक में भर कर गले मिल रहे हैं



(६१) रेडियो पर बच्चों के बीच—बचपन के संस्मरण सुना रहे हैं



(६२) रोगी बालक की सेवा



(६३) सबके लिये प्रेम

अंग्रेज बच्ची को गोद में लिये हुए



(६४) प्रसन्न मुद्रा में

अमेरिका के एक लड़के से हाथ मिलाते हुए

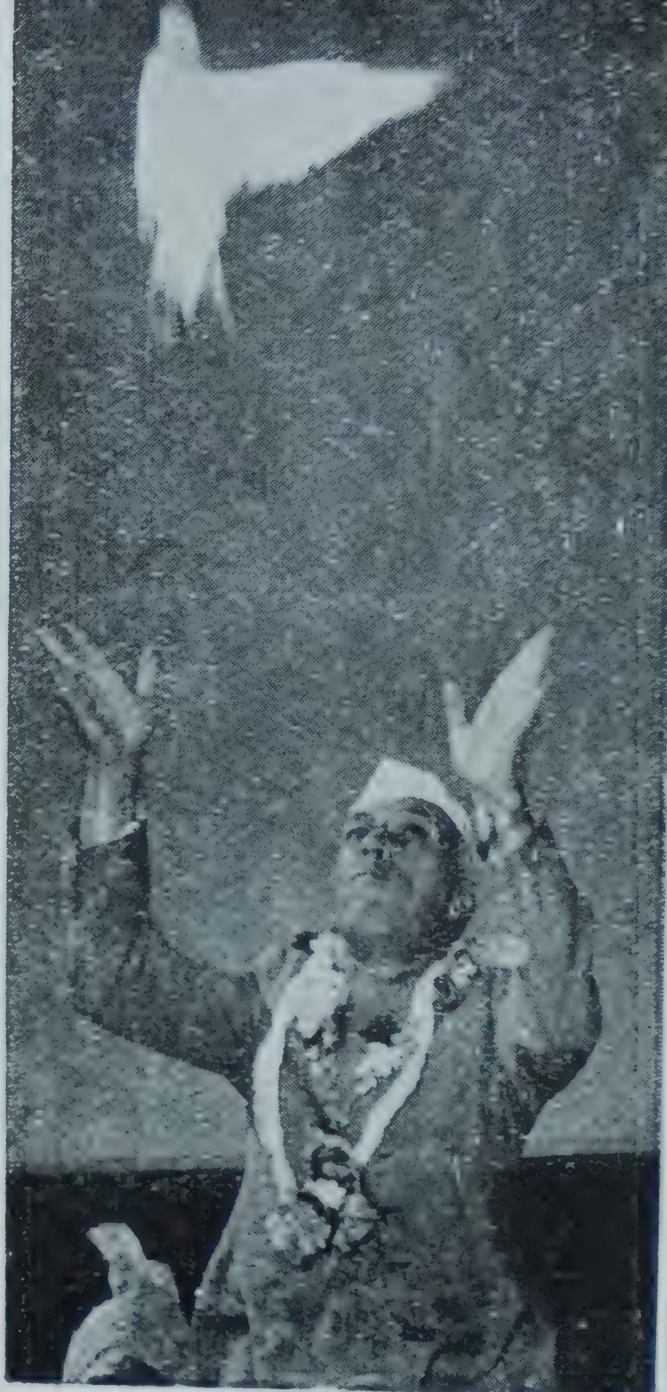


(६५) होली के रंग में



(६६) सावन का झूला





(६७) शांति के प्रतीक

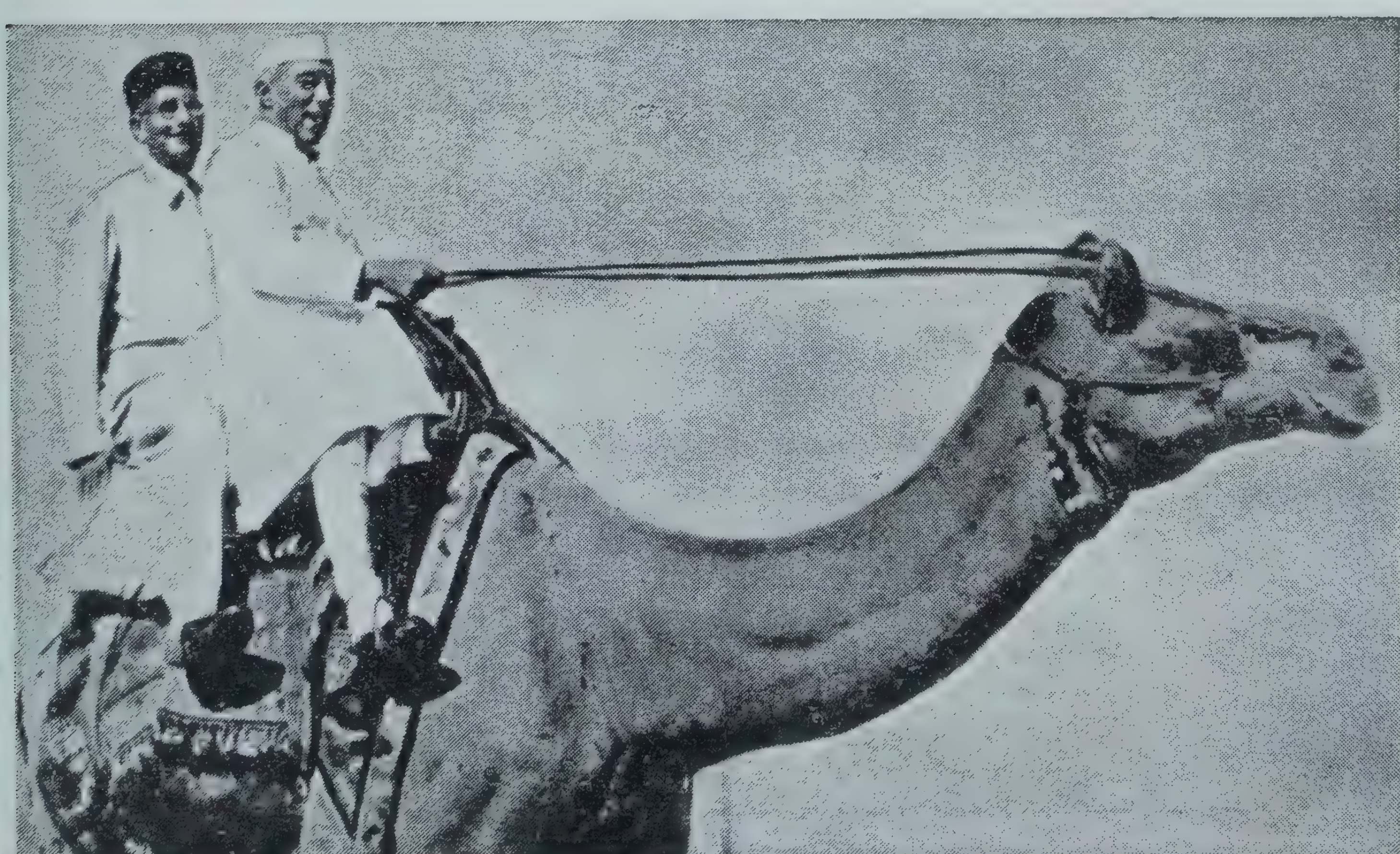
६५ वीं वर्षगांठ पर पंडितजी विशाल समारोह में शांति के 'सन्देश वाहक कबूतर' आकाश में छोड़ रहे हैं।

(६८) सलोनी सूरत

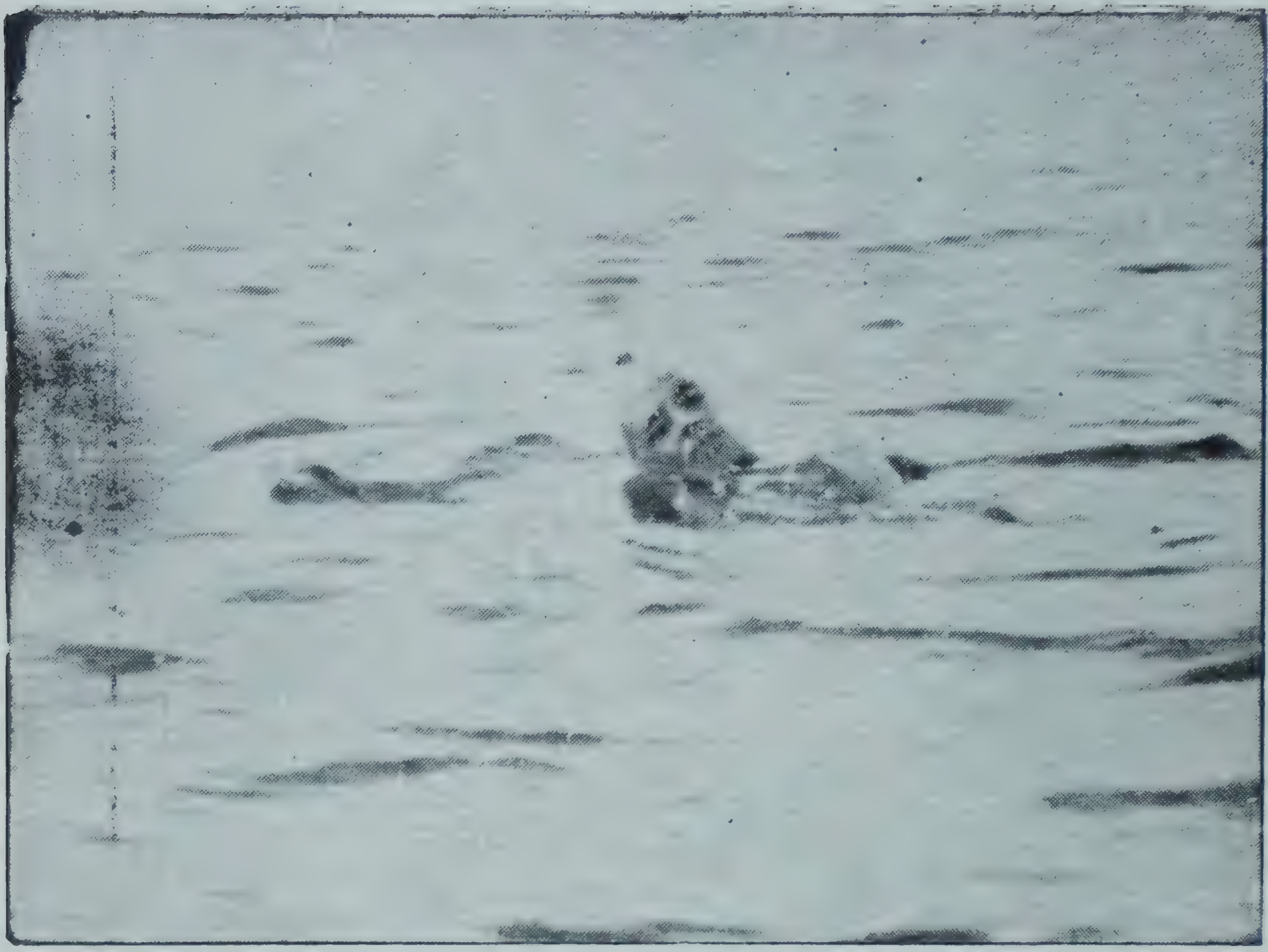
अजमेर में ख्वाजासाहब की दरगाह की तरफ़ से भेंट किये हुए साफ़ा और तलवार के साथ पंडितजी बड़े प्रसन्न दिखाई देते हैं।



(६९) घोड़े पर



(७०) ऊंट पर



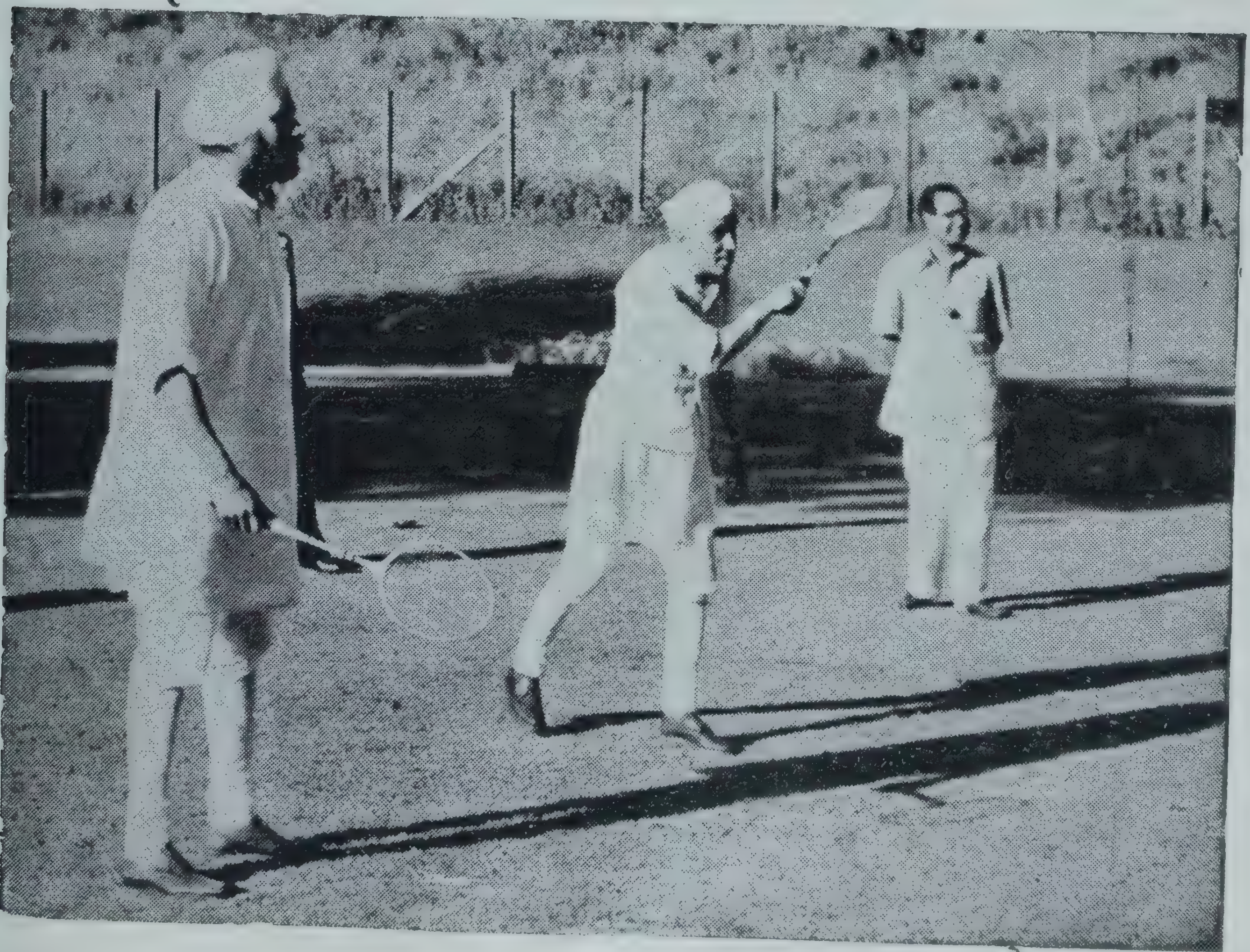
(७१) समुद्र की लहरों में



(७२) कोरचट का खेल खेल रहे हैं



(७३) बिलियर्ड खेल रहे हैं



(७४) बेडमिंटन खेल रहे हैं



(७५) क्रिकेट के कप्तान : ६४ वें वर्ष में

खेल के मैदान में



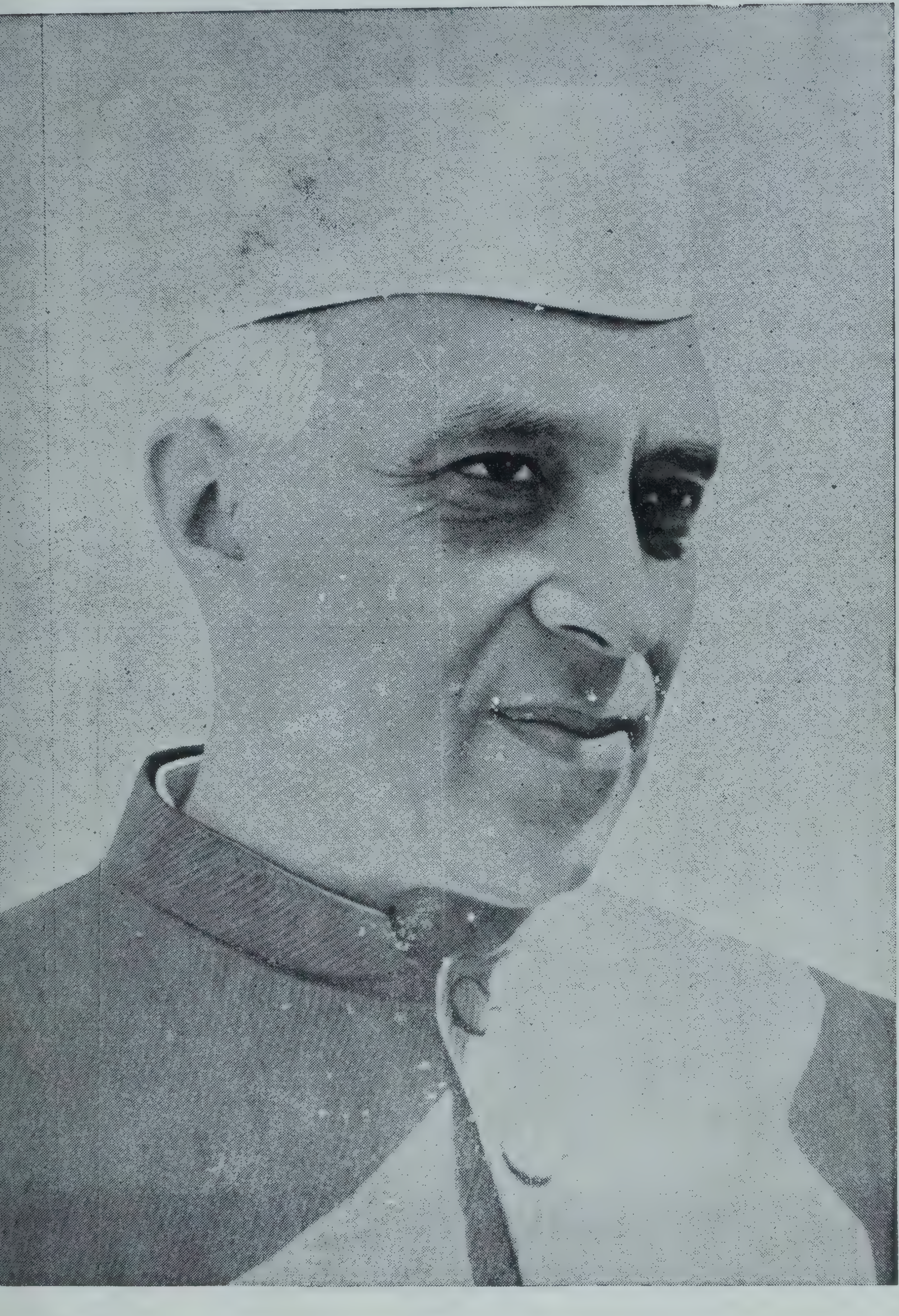
(७६) नेहरूजी के सभापतित्व में

आस्ट्रेलिया तथा एशिया के देशों के प्रतिनिधियों की सभा



(७७) इन पर सब पोशाकें खिलती हैं

अजमेर की दरगाहशरीफ़ की ओर से भेंट में मिला हुआ जोधपुरी साफ़ा पहने हुए



(७८) जन-नायक



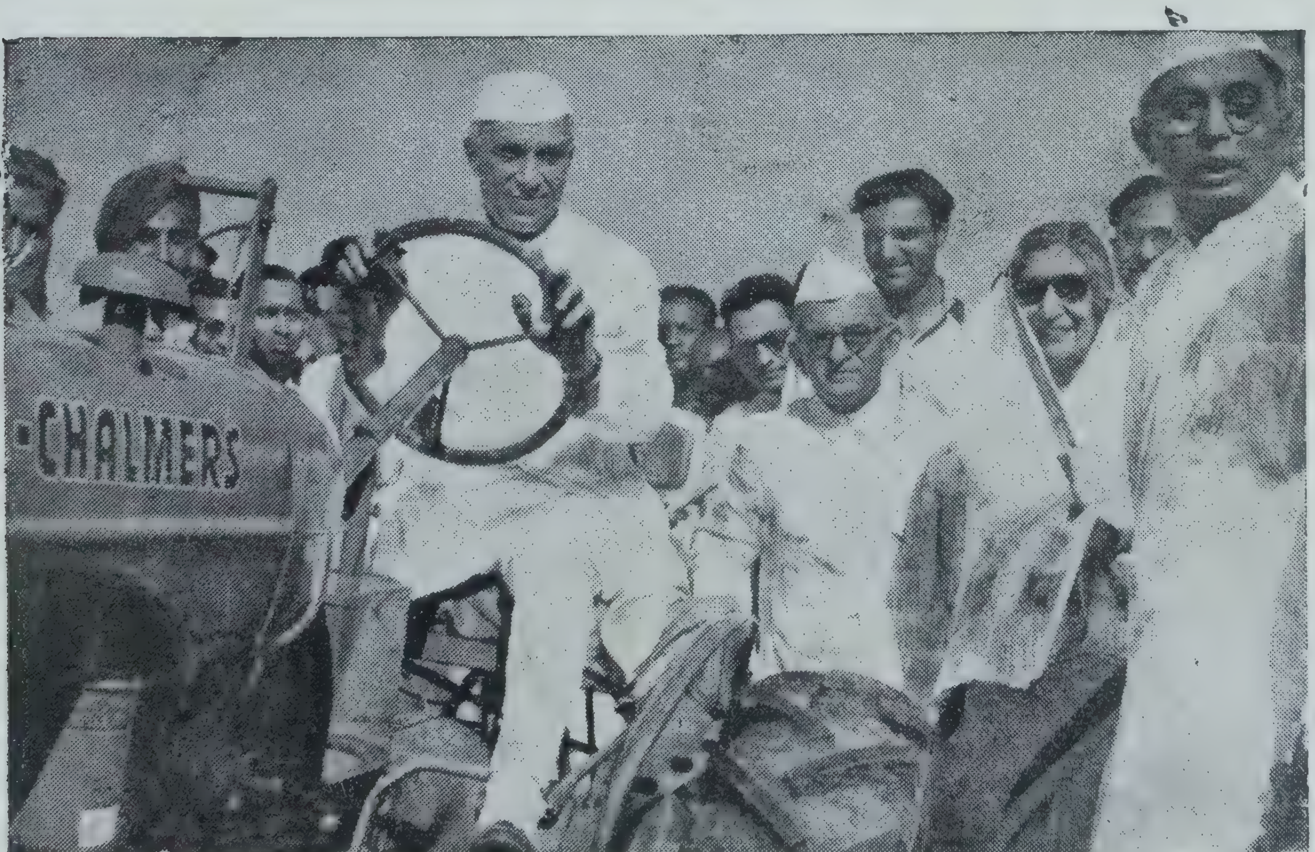
(७९) हजरतपुर गांव का एक मील लम्बा नाला खोद रहे हैं



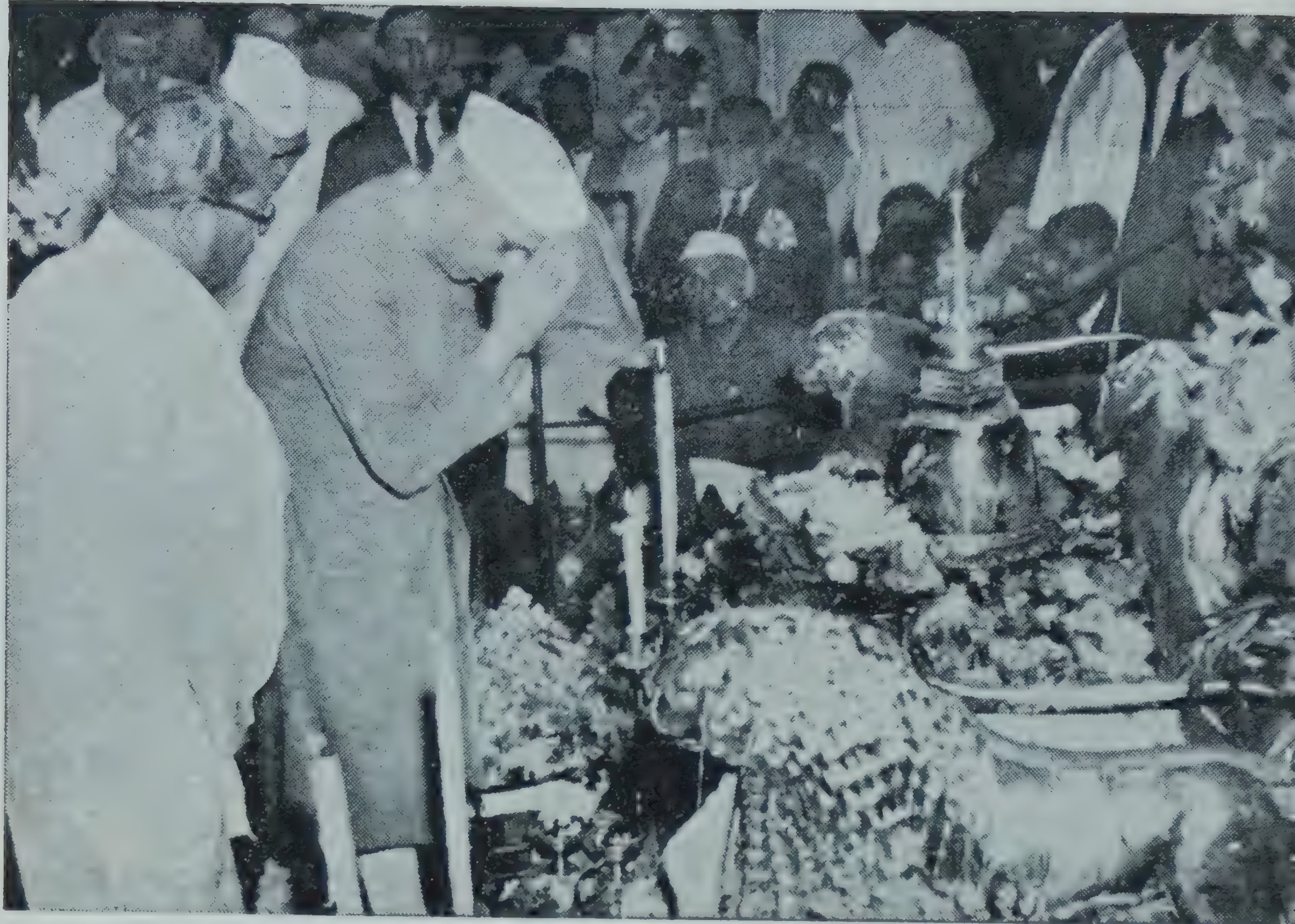
(८०) राजघाट पर वृक्षारोपण



(८१) चर्खा कातते हुए



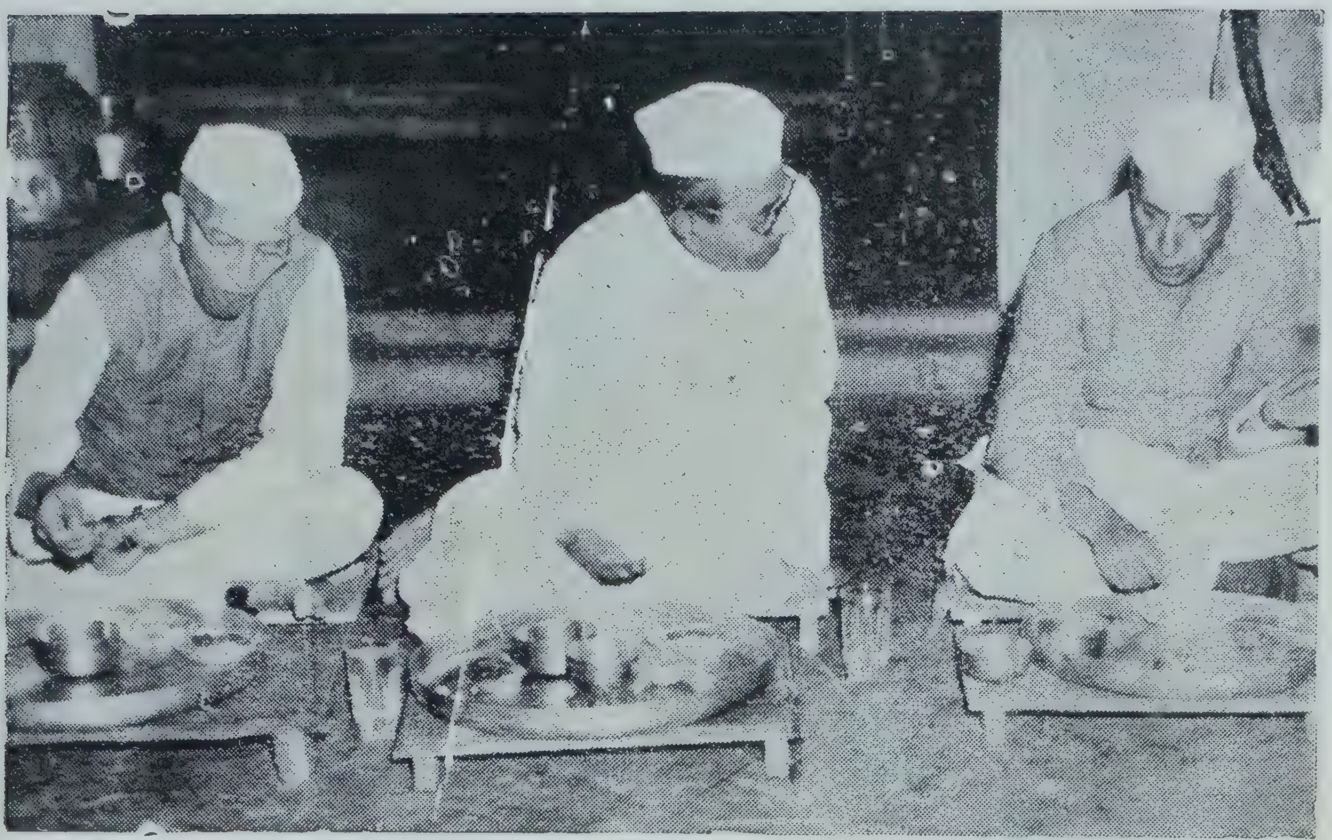
(८२) ट्रैक्टर के भी समर्थक



(८३) कलकत्ते में बौद्ध शिष्यों के धातु का समादर



(८४) शरणार्थी बहिन की बातें एकाग्रचित्त से सुन रहे हैं



(८५) भारतीय पद्धति से भोजन

पास में श्री बालाजी खेर तथा श्री मोरारजी देसाई



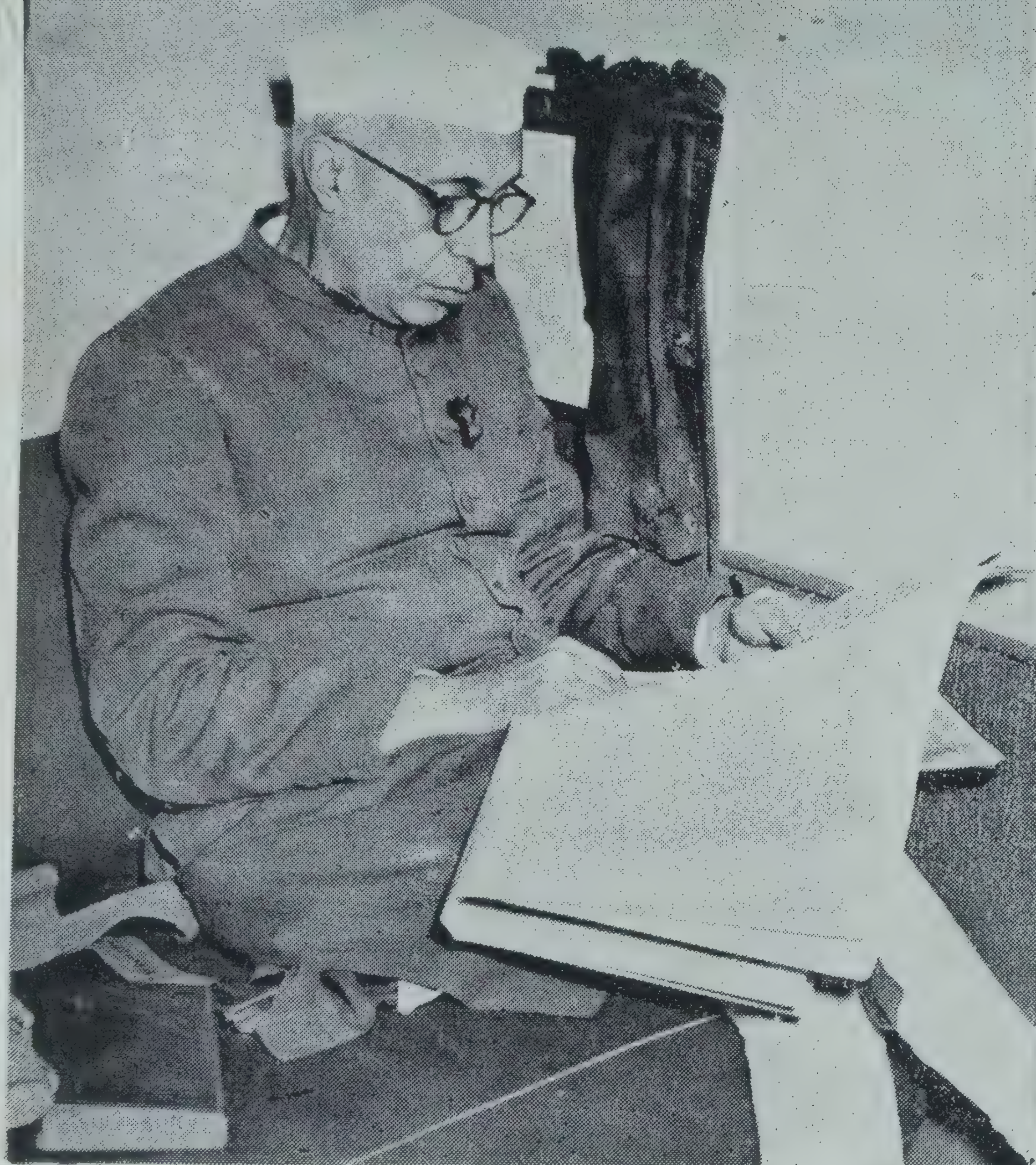
(८६) अन्नपूर्णा में भोजन का थाल ले रहे हैं





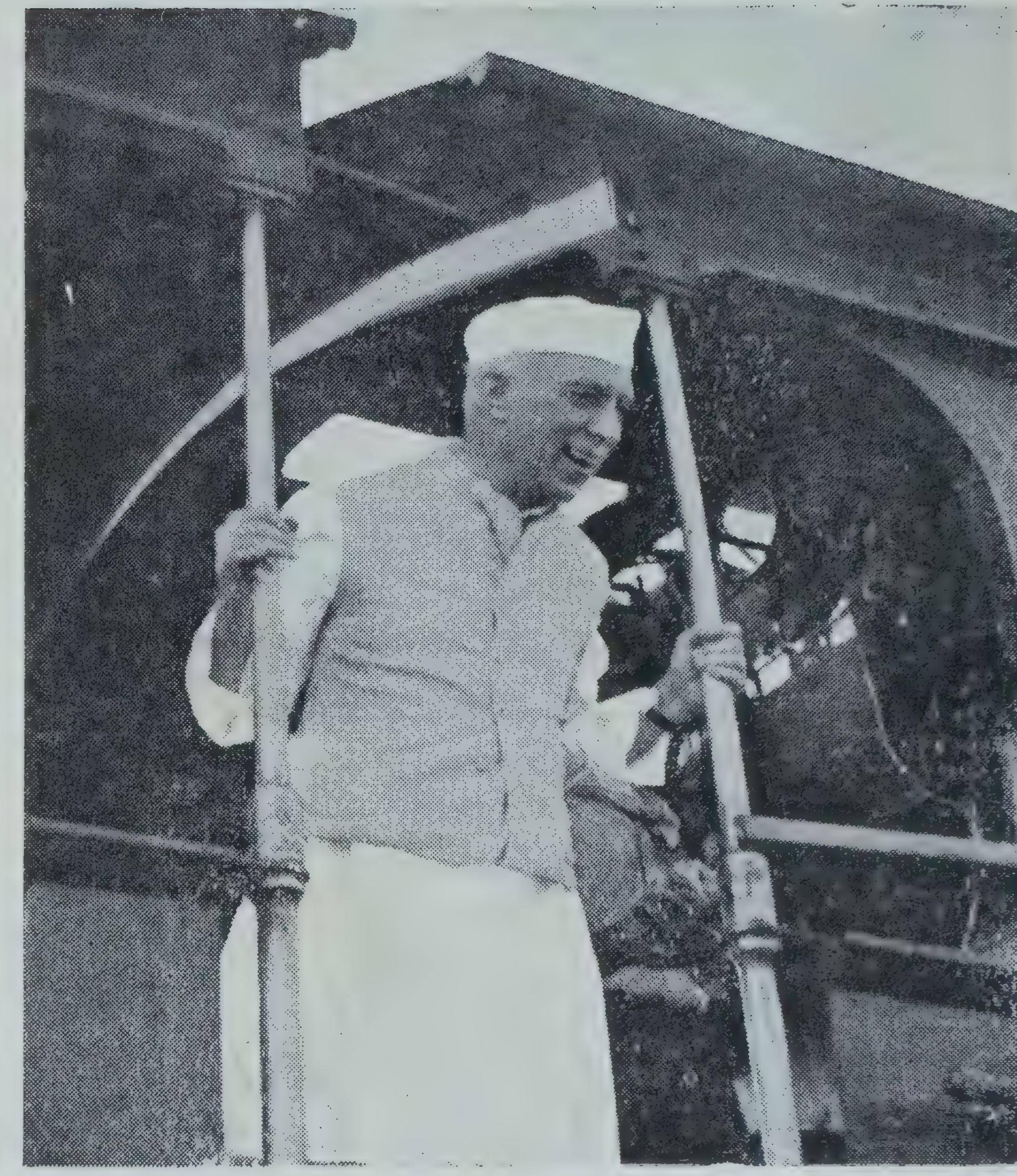
(८७) अजमेर की विराट सभा में दोपहर को भाषण

स्वागताध्यक्ष श्री जीतमल लूणिया छतरी लिये हुए पास में खड़े हैं



(८८) हवाई जहाज़ में अध्ययन

कहीं भी हों, पढ़ने का समय निकाल ही लेते हैं



(८९) रेल इंजन में खड़े होकर

जनता का स्वागत कर रहे हैं



(९०) संसार में भारत का मान बढ़ाने वाले

इनके संदेश दुनिया के सब देश बड़ी उत्सुकता से सुनते हैं

नेहरूजी की जीवन झांकी

यदि किसी से यह सवाल पूछा जाय कि आज की दुनिया में सब से लोकप्रिय आदमी कौन है, तो उसके जवाब में जो इनेगिने दो-तीन नाम सामने आवेंगे, उनमें एक होगा भारत के प्रधान मंत्री पं० जवाहरलाल नेहरू का नाम। निस्सन्देह दुनिया भर के लोग उन्हें प्यार करते हैं। भारत के पास न शक्ति है, न पैसा, फिर भी संसार में उसकी धाक है। आख़िर ऐसा क्यों है? बात यह है कि दुनिया आज बहुत छोटी हो गई है। विज्ञान ने स्थान की दूरी को बहुत कम कर दिया है। आज तो इस छोर से उस छोर तक कुछ ही घंटों में पहुंचा जा सकता है। संसार के एक छोर पर एक घटना होती है तो चन्द मिन्टों में ही उसका पता दुनिया क दूसरे छोर को लग जाता है। पता ही नहीं लग जाता बल्कि, उसका असर भी होता है। दूसरे शब्दों में कह सकते हैं कि आज हम सब राष्ट्रीय यानी एक देश के नहीं, अन्तर्राष्ट्रीय यानी सब देशों के हो गये हैं। समूची दुनिया हमारा देश बन गई है। ऐसी हालत में हम केवल अपने भले-बुरे की बात सोचकर ही संतोष नहीं मान सकते। सारी दुनिया की बात सोच कर हमें काम करना होगा।

हमारी सभ्यता और संस्कृति बड़ी पुरानी है, ऊंची भी है। दुनिया में उसका सदा से बड़ा मान रहा है लेकिन असली मान तो उसके तपोपूत नेताओं के कारण है। नेहरूजी ऐसे ही स्वनामधन्य नेता हैं। गांधीजी एक सन्त और महात्मा के रूप में अधिक प्रसिद्ध हैं। उन्होंने देश को स्वतंत्र कराया और अहिंसा के द्वारा कराया, इसलिए लोग उनका मान करते हैं। वे आज हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु सौभाग्य से उनके सुयोग्य राजनैतिक वारिस पं० जवाहरलाल नेहरू मौजूद हैं। वे भारत के प्रधान मंत्री हैं, लेकिन दुनिया में उनकी धाक प्रधान मंत्री के रूप में ही

नहीं है अपितु इसलिए भी है कि वह भारत के होकर भी सब देशों के हैं। वे अन्तर्राष्ट्रीय हैं। वे जब भी, जो भी बात करते हैं, केवल अपने देश का ही हित ध्यान में रख कर नहीं करते, बल्कि सारी दुनिया के हित की दृष्टि रहती है। इसीलिये दुनिया उनकी बात बड़े ध्यान से सुनती है और उनकी सूझबूझ और उनकी उदारता की कायल है। वे सचमुच 'उदारचरितानांतु वसुधैव कुटुम्बकम्' के जीते-जागते उदाहरण हैं।

आज दुनिया में भारत का जो स्थान है वह बहुत कुछ अंशों में उन्हीं के कारण है। दुनिया के बहुत से देश विशेषकर एशिया के पिछड़े हुए देश, भारत की ओर देखते हैं। उन्हें नेहरूजी से बल पाने की आशा है। वे सचमुच पूर्व के इने-गिने महान व्यक्तियों में से हैं। उनके नेतृत्व के कारण ही रूस और अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश भारत की उपेक्षा नहीं कर सकते। हम अभी सदियों की दासता से मुक्त हुए हैं। हमारे पैर अभी जमे नहीं हैं। हम ही क्यों, सारी दुनिया दो भयानक लड़ाइयों के कारण, आज अन्धकार में भटक रही है। इस समय नेहरू ही एक ऐसे लोकनायक हैं, जो उसे प्रकाश देकर रास्ता सुझा रहे हैं। वे ग़रीबों के रक्षक और कमज़ोरों के साथी हैं। वे महानाश की ज्वालाओं से लड़ते हुए इन्सानियत की रक्षा करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

जन्म और बचपन

जवाहरलाल नेहरू का जन्म उस कुल में हुआ है, जिसके बारे में प्रसिद्ध है:—

अपनी क़ुरबानी में है, मशहूर नेहरू खानदान।
शमअः जलती देखले, यह घर का घर परवाना है॥

नेहरूजी के पूर्वज काश्मीर के रहने वाले थे। मुग़ल बादशाह के कहने पर वे दिल्ली आये थे। बादशाह ने उनको रहने के

लिए नहर के किनारे पर एक घर दिया था। इसी नहर के किनारे रहने के कारण वे नेहरू कहलाने लगे। वैसे वे 'कौल' हैं। कुछ समय तक वे 'कौल नेहरू' कहलाये, फिर केवल 'नेहरू' रह गये। उस समय उस देश में बड़ी उथल-पुथल मची हुई थी। उसी उथल-पुथल में नेहरू-परिवार दिल्ली से आगरा जा बसा। यहीं पर सन् १८६१ में जवाहरलाल नेहरू के पिता पं० मोतीलाल नेहरू का जन्म हुआ। यहां उनके चाचा वकालत करते थे। चूंकि पिताजी का देहान्त उनके जन्म से पहले ही हो गया था, इसलिए मोतीलालजी की देखभाल वे ही करते थे। जब हाईकोर्ट आगरा से उठकर इलाहाबाद चला गया तो ये लोग भी वहीं चले गये। यहीं मोतीलालजी बड़े हुए और वकील बने। पहले तो उन्होंने वकालत कानपुर में शुरू की थी, पर जब वह चमक उठी, तो वे इलाहाबाद लौट आये। वकालत उनकी यहां भी खूब चमकी, अच्छी कमाई होने लगी। वे साहबी ठाठबाट से रहने लगे। यहीं सन् १८८९ ई० में, १४ नवम्बर के दिन, जवाहरलाल नेहरू का जन्म हुआ।

जवाहरलाल अपने माता-पिता के लाड़ले बेटे थे। उनकी दोनों बहनें श्रीमती विजयलक्ष्मी और श्रीमती कृष्णा उनसे बहुत छोटी हैं। उनके चचेरे भाई उनसे बहुत बड़े थे, इसलिए परिवार भर का लाड़प्यार इन्हीं को मिला। वे बड़े घर में पैदा हुए थे, इसलिए उन्हें स्कूल नहीं भेजा गया। घर पर ही उनके लिए अंग्रेज़ अभिभाविका रख दी गई। वही उनकी देखभाल करती थी। बचपन में वह अपने पिता से बहुत डरते थे। पिता उन्हें प्यार तो बहुत करते थे, पर थे बड़े क्रोधी। झूठी बात वे बिल्कुल नहीं सह सकते थे। एक बार ऐसा हुआ कि उनकी मेज़ पर दो फाउण्टेनपेन रखे हुए थे। उन्हें जवाहरलाल ने देख लिया। सोचने लगे कि पिताजी दो कलमों का क्या करेंगे, एक काफ़ी है, यह सोचकर उन्होंने एक कलम उठा लिया। कुछ देर बाद

मोतीलालजी उधर आए। देखा, एक कलम ग़ायब है। बस भभक उठे। नौकरों चाकरों से पूछताछ की, पर कुछ पता नहीं लगा। जवाहरलाल को बुलाया, पर वे पिताजी का क्रोध देखकर डर गये। कह दिया "मुझे नहीं मालूम।" लेकिन बाद में ढूंढ़ते-ढूंढ़ते वह कलम न्किला उन्हीं की जेब में। बस, अब क्या था। मोतीलालजी ने उनकी वह पिटाई की कि सारा बदन नीला पड़ गया। बेचारी मां को बड़ा दुःख हुआ। कई दिन तक वह बेटे के बदन पर क्रीम और मरहम लगाती रहीं।

जब वे ग्यारह वर्ष के हुए तो उनके लिए एक अंग्रेज़ अध्यापक रखे गये। उनका नाम था श्री एफ० टी० ब्रूक्स और वे थियोसोफ़िस्ट थे। इन्हीं से जवाहरलाल ने थियोसोफ़ी का ज्ञान पाया और वे तेरह वर्ष की आयु में थियासोफ़िकल सोसायटी के सदस्य बन गये। लेकिन जब ब्रूक्स साहब चले गये तो थियोसोफ़ी में उनकी रुचि भी समाप्त हो गई। असल में थियोसोफ़िस्टों का आरामतलबी का जीवन उन्हें पसन्द न था। ब्रूक्स साहब के साथ-साथ एक पण्डितजी उन्हें हिन्दी तथा संस्कृत पढ़ाने आते थे। एक बूढ़े मुंशी उन्हें कहानियां सुनाया करते थे। धार्मिक कहानियां उन्हें उनकी चाची सुनाती थीं। वैसे वे सब प्रकार की कहानियां पसन्द करते थे, पर देशभक्ति की कहानियां उन्हें ख़ास तौर से अच्छी लगती थीं। सन् १८५७ के विद्रोह की कहानियां वे बड़े चाव से सुना करते थे।

असल में बचपन से ही उनका रुझान देश को आज़ाद कराने की ओर था। उन्हें अंग्रेज़ों के अत्याचार बड़े बुरे लगते थे। उन दिनों अफ्रीका के बोअर अंग्रेज़ों से लड़ रहे थे। उस लड़ाई का समाचार जानने को वे बड़ी उत्सुकता से अखबार पढ़ते थे। उनकी सहानुभूति बोअरों से थी और वे सोचा करते थे कि हम लोग भी अंग्रेज़ों से क्यों नहीं लड़ते? क्यों नहीं उनको अपन देश से निकाल देत? उन्हीं दिनों रूस और जापान

में भी लड़ाई हो रही थी। जब जापान ने रूस को हरा दिया तो बालक जवाहरलाल को बड़ी ख़ुशी हुई। वह एशिया का एक छोटा सा देश था। उसने इतने बड़े रूस को हरा दिया था, इस बात से उनके मन में यह विचार उठा कि मैं भी अपने देश के लिए लड़ूंगा, मैं भी उसे आज़ाद कराऊंगा।

इङ्गलैंड में शिक्षा

उनके मन में ऐसे ऐसे विचार उठा करते थे कि सन् १९०५ में पं० मोतीलाल नेहरू सपरिवार यूरोप की यात्रा पर निकले। फ्रांस, इटली, स्विटज़रलैंड, जर्मनी और इङ्गलैंड, वे सभी जगह घूमे। यूरोप का रहन-सहन और वातावरण उन सबको अच्छा लगा। उन्होंने जवाहरलाल को हैरो के प्रसिद्ध विश्वविद्यालय में भर्ती करवा दिया। इस विश्वविद्यालय में राजघराने और बड़ेबड़े लार्डों के लड़के पढ़ते थे। कुछ दिन तो वहां उनका मन न लगा। सब नये थे, पर जल्दी ही उन्होंने काफ़ी मित्र बना लिये। पढ़ते भी वे ख़ूब थे। समाचार-पत्र पढ़ने में उन्हें विशेष रुचि थी। इसलिए शीघ्र ही उनकी धाक जम गई। उन दिनों देश में स्वदेशी का आन्दोलन चल रहा था। कभी किसी प्रांत में, कभी किसी भाग में कोई न कोई घटना हो ही जाती थी। फिर कुछ लोग जेल में डाल दिये जाते थे। कुछ को देश निकाला दे दिया जाता था। साथ ही सामाजिक सुधारों का ज़ोर भी था। मतलब यह कि भारत की जनता आगे बढ़ रही थी। वह एक ओर पुराने संस्कारों के बन्धन तोड़ रही थी, तो दूसरी ओर अंग्रेज़ों के ज़ुल्म का भी अन्त चाहती थी। जवाहरलाल यह सब बातें पढ़ते और तिलमिला उठते, पर मन की बात अभी किसी से कह न पाते।

सन् १९०७ में वे केम्ब्रिज के ट्रिनिटी कालेज में भर्ती हुए। तीन वर्ष व वहां रहे। उनका मुख्य विषय प्राकृतिक विज्ञान था,

पर वे साहित्य, इतिहास और अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करते थे। इन विषयों पर बहस भी करते थे, पर वैसे वे संकोची भी बहुत थे। केम्ब्रिज में भारतीयों की एक सभा थी, 'मजलिस'। उसमें वे जाते थे, पर भाषण वहां उन्होंने कभी नहीं दिया। हां, इन दिनों भारत के जो बड़े-बड़े नेता इंगलैन्ड आते थे, वे यहां भाषण देते थे। उनमें से लाला लाजपतराय और श्री गोपालकृष्ण गोखले से जवाहरलाल विशेष रूप से प्रभावित हुए। इन्हीं दिनों लार्ड कर्ज़न ने बंगाल के दो टुकड़े कर डाले जिसके कारण सारे भारत में, विशेषकर बंगाल में भीषण आन्दोलन उठ खड़ा हुआ। अब तो जवाहरलाल के मन में अंग्रेज़ी शासन के प्रति जो विद्रोह धीरे-धीरे पनप रहा था, वह तेज़ हो उठा। इसी समय इनके पिताजी का एक लेख वहां के एक अंग्रेज़ी पत्र में निकला, जिसमें उन्होंने अंग्रेज़ों की प्रशंसा की थी। जवाहरलाल ने जब उसे पढ़ा तो बड़े नाराज़ हुए और नाराज़ होकर उन्होंने पिताजी को एक सख़्त पत्र भी लिख डाला। पत्र पाकर पं० मोतीलाल नेहरू का मन शंकित हो उठा कि कहीं जवाहरलाल क्रांतिकारी तो नहीं बनते जा रहें हैं, पर ऊपर से वे चुप ही रहे।

भारत में वापसी और विवाह

इसके दो वर्ष बाद तक उन्होंने क़ानून पढ़ा। इन दिनों वे ख़ूब घूमे और इन्हीं दिनों साम्यवाद का अध्ययन करने का अवसर भी उन्हें मिला। आख़िर बैरिस्टर बन कर सन् १९१२ की शरद ऋतु में वे भारत लौटे। तब देश शान्त था। उग्र विचारों के लोगों को सरकार ने कुचल दिया था। हां, इसी वर्ष दिसम्बर में कांग्रेस का अधिवेशन बांकीपुर, पटना में हुआ। नेहरूजी इसमें प्रतिनिधि बन कर गये। वहां वे गोखले से मिले और उन्हें वे ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति लगे जो गम्भीरता से राज-नीति और सार्वजनिक विषयों पर विचार करते थे। वहां से लौट कर उन्होंने बरिस्टरी शुरू की पर उनका मन उसमें न

लगा। वे तो देश की ग़ुलामी को दूर करने के लिए तड़प रहे थे। वे उसे जल्दी से जल्दी आज़ाद देखना चाहते थे। और चाहते थे कि इसके लिए उग्र रूप से आन्दोलन चलाया जाय।

इसी बीच में सन् १९१४ में विश्वव्यापी युद्ध शुरू हो गया। उस युद्ध के कारण भारत में अंग्रेज़ों के अत्याचार और भी बढ़ गये। यह देश ज़बरन युद्ध में झोंक दिया गया। जिन्होंने विरोध किया वे भारत रक्षा क़ानून के शिकार हुए। लेकिन इसी कारण जनता की चेतना-शक्ति फिर जाग उठी। श्रीमती एनी बेसेन्ट का होमरूल आन्दोलन इसी काल में उठा। पिता-पुत्र दोनों ने उसमें भाग लिया। इधर देश की यह अवस्था थी, उधर सन् १९१६ में जवाहरलालजी की शादी बड़ी शान-शौकत के साथ कमलाजी से हुई। कमलाजी दिल्ली रहती थीं। वे जितनी सुन्दर थीं, उतनी ही, गुणवती भी थीं। जीवन भर वे पति के पदचिन्हों पर चलती रहीं। अगल वष सन् १९१७ में उनकी एकमात्र जीवित सन्तान इन्दिरा का जन्म हुआ।

गांधीजी से भेंट

सन् १९१६ का वर्ष विवाह के कारण ही नहीं, बल्कि एक और कारण से जवाहरलाल के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इसी वर्ष लखनऊ कांग्रेस में उनकी भेंट गांधीजी से हुई। गांधीजी अफ्रीका से लौटे ही थे और वहां पर उन्होंने जो अभूत-पूर्व सफलता पाई थी, उसके कारण उनका बड़ा नाम था। लेकिन इस बार गांधीजी ने जवाहरलालजी को विशेष प्रभावित नहीं किया। वे उन्हें बहुत सीधे-साधे और राजनीति से दूर रहने वाले मनुष्य लगे। इसके विपरीत इलाहाबाद में उन्होंने सरो-जिनी नायडू के जो भाषण सुने, वे देशभक्ति से भरे हुए थे। लेकिन धीरे-धीरे देश में गांधीजी का नाम आगे आने लगा। चम्पारन और खेड़ा के सत्याग्रहों के बाद वे काफ़ी प्रसिद्ध हो गये। किसानों के लिए उन्होंने जो सफलता प्राप्त की, उसका

जवाहरलालजी पर असर हुआ और वे मन-ही-मन गांधीजी के भक्त बन गये।

सत्याग्रह की दीक्षा

इसके कुछ दिन बाद देश में बहुत बड़ा तूफ़ान उठा और उसकी चरमसीमा हुई सन् १९१९ में जलियांवालाबाग के हत्या काण्ड में। नेहरूजी जो कुछ चाहते थे वही उनके सामने आ-गया। वे बहुत प्रसन्न हुए और पूरे दिल से आन्दोलन में कूद पड़े। उन्होंने आनन्द भवन का वैभव छोड़ दिया। उन्होंने वकालत के साथ-साथ अंग्रेज़ी शान-शौकत को भी तिलांजलि देदी। वे किसानों में घुलमिल जाने को आतुर हो उठे और शीघ्र ही वे किसान आन्दोलन की रीढ़ बन गये। उनके इस काम का पं० मोतीलाल नेहरू पर भी असर हुआ। वे भी शान की ज़िन्दगी छोड़कर गांधीजी के साथ मिल गए। परिणाम यह हुआ कि सन् २१ में पिता-पुत्र दोनों एक साथ गिरफ़्तार कर लिये गये। यह उनकी पहली गिरफ़्तारी थी। दोनों को ६-६ महीने की सज़ा हुई। बाद में जवाहरलालजी को तीन महीने में ही छोड़ दिया गया। बाहर आकर वे कांग्रेस के संगठन का काम करने लगे, विशेष कर विलायती वस्त्रों के बहिष्कार में उन्होंने अधिक दिलचस्पी ली। इसी बीच में वे गांधीजी से मिलने अहमदाबाद गये, परन्तु गांधीजी तबतक पकड़े जा चुके थे। जवाहरलालजी इलाहाबाद लौट आए, लेकिन सरकार ने उनको फिर जेल में डाल दिया। उन दिनों जेल में आजकल जैसी सुविधाएं नहीं थीं। उनको काफ़ी कष्ट दिये जाते थे। लेकिन फिर भी वे वहां पढ़ने-पढ़ाने, बादलों को देखने और प्रकृति का अध्ययन करने में मग्न रहते थे। जवाहरलालजी जहां एक ओर इतने बड़े राजनैतिक नेता हैं वहां उनके पास कवि का हृदय भी है, प्रकृति से उन्हें बहुत प्रेम है।

सन् २३ में वे जेल से छूटे तो हवा पलट चुकी थी। गांधीजी

का चलाया हुआ सत्याग्रह आन्दोलन ढ़ीला पड़ गया था और कांग्रेस में स्वराज्य दल के नाम से एक नया दल बन गया था। इस नए दल के नेता उनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू और देशबन्धु चितरंजनदास थे। ये लोग कौंसिलों में जाकर आज़ादी की लड़ाई लड़ना चाहते थे। जवाहरलाल को यह बात अच्छी नहीं लगी। वे एक योद्धा थे और योद्धा की तरह लड़ना चाहते थे, उन्हें जनता के बीच काम करना अच्छा लगता था।

इस बीच उन्हें ख़बर लगी कि नाभा के महाराज को गद्दी से उतार दिया गया है और सिख उसके विरुद्ध आंदोलन कर रहे हैं। वे वहां की हालत देखने नाभा गए। लेकिन पुलिस ने उनको भी गिरफ़्तार कर लिया। वे उनको बेड़ियां पहना कर बाज़ार में से ले गए और उनको एक बहुत ही गंदी जेल में रखा। बाद में शायद पुलिस को अपनी भूल मालूम हुई और उन्होंने पंडितजी को छोड़ दिया। लेकिन जेल की गन्दगी का उन पर इतना असर हुआ कि वे एक महीने तक बीमार रहे। इन्हीं दिनों वे प्रयाग म्यूनिसिपल बोर्ड के चेयरमैन भी रहे। वहां इन्होंने बड़ी लगन से लोगों की सेवा की। जनता और सरकार दोनों ने इनके कामों की प्रशंसा की।

कुम्भ का मेला

इन सब बातों से पता लगता है कि जवाहरलालजी शुरू से ही बड़े निडर और साहसी रहे हैं। आजकल जैसे वे बड़ी से बड़ी भीड़ में कूद पड़ते हैं वैसा ही वे तीस साल पहले भी करते थे, बल्कि अधिक करते थे। सन् १९२४ के कुम्भ की बात है, प्रयाग की। लाखों नर-नारी वहां पहुंचे। त्रिवेणी में जल बहुत गहरा था। मेला-प्रबन्धक कमेटी ने बालू डाल कर उसे समथल तो किया नहीं, वहां स्नान करना रोक दिया। वहां तख़्ते गाड़ दिये और सशस्त्र घुड़सवार पुलिस तैनात करदी। कुम्भ के

अवसर पर लोग त्रिवेणी में स्नान न कर सकें, यह बड़ी अनोखी बात थी। पं० मदनमोहन मालवीयजी ने बहुत लिखा-पढ़ी की, पर फल कुछ न हुआ। पं० जवाहरलाल नेहरू को भी इस बात की सूचना मिली। वे तुरन्त कांग्रेस स्वयंसेवक लेकर घटना-स्थल पर पहुंचे। मालवीयजी ने उन्हें शान्त रहने को कहा। वे चाहते थे कि किसी तरह यह समस्या शान्ति से सुलझ जाय पर उनके किये कुछ भी नहीं हो रहा था। जब कई घण्टे बीत गये तो नेहरूजी से न रहा गया। वे एकाएक तेज़ी से उछले और तिरंगा झण्डा लेकर तख्ते की दीवार पर चढ़ गये। घुड़सवार पुलिस देखती ही रह गई। बस अब क्या था, स्वयंसेवकों ने भी उनका अनुकरण किया। नेहरूजी ने दूसरी ओर जाते ही तख्तों को उखाड़ डाला और नहाने के लिये मार्ग बना दिया।

साहस के इस काम से नेहरूजी जनता की आंखों में बहुत ऊंचे उठ गये। लोग उनके दर्शन को उमड़ पड़े और तब सरकार ने घबराकर त्रिवेणी में बालू डालना शुरू कर दिया। यात्रियों ने बड़े प्रेम से संगम पर स्नान किया।

साइमन-कमीशन का बहिष्कार

सन् '२६ में नेहरूजी फिर विलायत गये, क्योंकि उनकी पत्नी कमला नेहरू बीमार थीं। उस यात्रा में वे रूस भी गये और उन्होंने साम्यवाद का गहराई से ज्ञान प्राप्त किया।

सन् '२८ में भारत में साइमन कमीशन का आगमन हुआ। वह भारत की स्थिति की जांच करने आया था, लेकिन उसके सब सदस्य अंग्रेज़ थे। इसलिए देश भर में उसका बहिष्कार किया गया। लखनऊ में जब कमीशन का आगमन हुआ तब जवाहरलाल नेहरू वहीं पर थे। उन्होंने उस बहिष्कार में पूरा भाग लिया। उन पर ख़ूब लाठियां बरसीं। जिस समय घुड़सवार पुलिस डंडे बरसा रही थी, जवाहरलालजी बीच

सड़क पर खड़े हुए थे। उन्होंने स्वयंसेवकों को पिटते और गिरते देखा, लेकिन वे अहिंसक थे, इसलिए तिलमिलाकर भी मौन खडे रहे। इतने में उन्होंने देखा कि एक सवार बड़ी तेज़ी से डंडा घुमाता हुआ उनकी ओर आ रहा है। तब वे चिल्ला उठे, "मारो, मारो।' इस पर उस सवार ने उनकी पीठ पर डंडे बरसाए। उनकी चोट से जवाहरलाल को चक्कर तो आया, पर वे वहां से हिले नहीं। शाम तक नहीं हिले। दूसरे दिन फिर ऐसा ही हुआ। जवाहरलाल और उनके दल पर ख़ूब लाठियां बरसीं। इन प्रहारों से जवाहरलालजी तिलमिला गए और उनकी आंखों के सामने अंधेरा छा गया। वे गिर पड़े। उनके साथी उन्हें उठा कर दूर ले गए। लेकिन कुशल यह हुई कि उनके किसी नाज़ुक हिस्से में चोट नहीं आई।

लाहौर कांग्रेस के राष्ट्रपति और नमक सत्याग्रह

उनके इस त्याग और कार्य का यह परिणाम हुआ कि सन् २९ की कांग्रस के लिए देश ने उनको राष्ट्रपति चुना। इससे पूर्व सन् २८ में कलकत्ते में उनके पिता पं० मोतीलाल नेहरू राष्ट्रपति थे। इस अधिवेशन में औपनिवेशिक स्वराज्य का प्रस्ताव पास हुआ था जिसका जवाहरलालजी ने विरोध किया था, पर गांधीजी के समझाने पर वे शान्त हो गये थे। इस प्रस्ताव में यह स्पष्ट कह दिया गया था कि यदि सरकार एक वर्ष में यह प्रस्ताव स्वीकार न करे तो कांग्रेस पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा कर देगी। सन् २९ में कांग्रेस लाहौर में हुई और इसमें पहली बार देश ने पूर्ण स्वाधीनता की घोषणा की, क्योंकि सरकार ने कलकत्ता कांग्रेस का प्रस्ताव नहीं माना। पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव पास हो जाने से जवाहरलालजी को बड़ी प्रसन्नता हुई। सभापति के पद से जो उन्होंने भाषण दिया वह बहुत ही जोशीला था। इसमें उन्होंने कहा, "मैं स्पष्ट कह देना चाहता हूँ कि म सोशलिस्ट और रिपब्लिकन समाजवादी

और प्रजातन्त्रवादी हूँ। गुप्त षड्यन्त्र करने का समय चला गया, अब तो भारतमाता को मुक्त करने के लिए खुला षड्यन्त्र करना चाहिए"।

इस अधिवेशन के बाद गांधीजी ने अपना सत्याग्रह आन्दोलन शुरू किया। उन्होंने एक बार फिर सरकार से आज़ादी का आश्वासन मांगा, लेकिन सरकार ने उसका जवाब पत्थरों से दिया। इस पर उन्होंने पूर्ण स्वतंत्रता का आन्दोलन शुरू कर देने की घोषणा की। उन्होंने समुद्र के किनारे तक पैदल यात्रा की। वह यात्रा डांडी-यात्रा के नाम से प्रसिद्ध है। वहां उन्होंने नमक-कानून का भंग करके सत्याग्रह का श्रीगणेश किया। फिर तो सारे देश में एक तूफ़ान आगया। जवाहरलालजी स्वयं डांडी गए और वहां से लौट कर उन्होंने अपने प्रांत में इस आन्दोलन का नेतृत्व किया। १० अप्रेल को उन्होंने नमक क़ानून का भंग किया। वे ही नहीं, उनका सारा परिवार–पिता माता, उनकी पत्नी, दोनों बहनें सब इसमें कूद पड़े और सरकार ने सबको पकड़ कर जेल में बन्द कर दिया। छै महीने बाद वे छूटे, लेकिन उन्होंने फिर क़ानून तोड़ा। सरकार ने इस बार उनको गिरफ़्तार करके १८ महीने की सज़ा दी। जब वे जेल में थे तब उनके पिता पंडित मोतीलाल नेहरू बीमार हो गये। इतने बीमार हुए कि जीने की आशा न रही और एक दिन सारे भारत को शोक में डुबो कर वे इस संसार से चल बसे। जवाहरलालजी पिता से मिलने के लिए जेल से आए थे, लेकिन वे ज़्यादा दिन बाहर न रह सके और वापस जेल चले गए।

गांधी-इरविन-समझौता

इस बीच गांधी-इरविन समझौता हुआ और आन्दोलन बन्द कर दिया गया। फिर गांधीजी गोलमेज़ कान्फ्रेंस में भाग लने के लिए लन्दन गए, लेकिन सरकार ने समझौते का पालन

नहीं किया। इस पर जवाहरलालजी ने फिर आन्दोलन छेड़ दिया और सरकार ने उन्हें पकड़ कर दो साल के लिए जेल में बन्द कर दिया। इधर गांधीजी भी इङ्गलैण्ड से निराश ही लौटे। उनके बम्बई आते ही आन्दोलन तेज़ हो उठा। सदा की भांति जवाहरलालजी का परिवार फिर उसमें कूद पड़ा। पुलिस ने उनकी माता स्वरूपरानी पर एक जलूस में लाठी बरसाई, जिससे वे घायल हो गईं। जवाहरलालजी को जेल में जब यह ख़बर मिली तो उन्हें बड़ा सदमा पहुंचा। उनका काम बन्द नहीं हुआ और सन् ३४ तक वे इसी प्रकार कभी जेल से बाहर तो कभी अन्दर रहे।

बिहार भूकम्प और कमला नेहरू की मृत्यु

सन् ३४ में बिहार में भूकम्प आया। जवाहरलालजी पीड़ित बिहार की सेवा करने के लिए वहां भी पहुंचे। वे घूम-घूम कर सारे प्रान्त में लोगों को सान्त्वना देते थे और काम करते थे। इस काम में वे अपना खान-पान, आराम और नींद सबकुछ भूल गए। लेकिन सरकार तो उनके पीछे पड़ी हुई थी। उसने उन्हें गिरफ्तार करके कलकत्ता भेज दिया। बाद में वे अलमोड़ा बदल दिये गए। यहीं से ४ सितम्बर सन् ३५ को उन्हें इसलिए छोड़ा गया कि उनकी पत्नी कमलाजी की हालत बहुत ख़राब हो गई थी। उन्हें तपेदिक हो गई थी। इसी बीमारी के कारण २८ फरवरी सन् ३६ को स्विटजरलैंड में उनका देहान्त हो गया। पण्डितजी तब उनके पास ही थे। इससे पहले जब वे बहुत बीमार थी तब सरकार ने उन्हें इस शर्त पर छोड़ना चाहा कि वे राजनीति में भाग नहीं लेंगे। कमलाजी ने जब इस शर्त की बात सुनी तो उन्होंने जवाहरलालजी को कहला भेजा—इस शर्त को कभी मंज़ूर मत करना। जवाहरलालजी भी कब मंज़ूर करने वाले थे। कमलाजी अकेली स्विटजरलैंड चली गईं।

कमला नेहरू की मृत्यु से पंडितजी को बहुत दुःख हुआ,

लेकिन वे सिपाही थे। देश लौट कर वे फिर कांग्रेस के काम में लग गए। देश ने उनको इस वर्ष लखनऊ और अगले वर्ष फ़ैजपुर कांग्रेस का क्रमशः दूसरी और तीसरी बार सभापति चुना।

चुनाव और दूसरा विश्व-युद्ध

इस बीच जवाहरलालजी की माताजी भी, जो कि एक के बाद एक दुख के पड़ने से शोकाकुल हो उठी थीं, चल बसीं। लेकिन जवाहरलालजी सारे देश में घूम घूम कर जनता से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करते रहे। उनकी जिम्मेदारियां बहुत बढ़ गई थीं। देश के सामने नए विधान के अनुसार नए चुनावों का सवाल था। कांग्रेस को नये विधान का विरोध भी करना था और वह पदग्रहण करने का भी निश्चय कर चुकी थी। यानी वह पद-ग्रहण करके अन्दर जाकर विरोध करना चाहती थी। जवाहरलालजी ने इसके लिए डटकर प्रयत्न किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि सात प्रान्तों में कांग्रेस की सरकार बन गई। लेकिन बहुत शीघ्र ही सन् ३९ में दूसरा महायुद्ध शुरू हो गया। ब्रिटिश सरकार ने बिना पूछे ही देश को युद्ध में झोंक दिया और लड़ने को कहा। इस पर वायसराय और गांधीजी के बीच लम्बी बातचीत शुरू हुई। कांग्रेस चाहती थी कि जबतक देश को आज़ादी का आश्वासन नहीं मिलेगा, हम नहीं लड़ेंगे। गांधीजी ने कुछ शर्तें रखीं, लेकिन समझौता नहीं होसका। तब गांधीजी ने युद्ध का विरोध करने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रह शुरू किया। जवाहरलालजी ने इसमें भाग लिया। वे गिरफ़्तार किये गए, पर कुछ दिनों बाद छोड़ दिये गये।

सन् ४२ का विद्रोह

इधर मार्च १९४२ में भारत का सहयोग प्राप्त करने के लिए सर स्टेफर्ड क्रिप्स ब्रिटिश सरकार क प्रस्ताव लेकर आये,

लेकिन देश ने उन्हें स्वीकार नहीं किया। गांधीजी अब दिन पर दिन उग्र होने लगे। एक बार उनमें तथा नेहरूजी में मतभेद भी पैदा होगया, पर अन्त में सब लोग एकमत होगये और ८ अगस्त को बम्बई में कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' प्रस्ताव को पास कर दिया। इस पर सरकार ने उसी दिन गांधीजी और नेहरूजी सहित सब नेताओं को गिरफ़्तार कर लिया। इससे देश में वह महान आन्दोलन शुरू हुआ, जिसने ब्रिटिश सरकार की जड़ें हिला दीं। सन् ४२ का यह आन्दोलन हमारे स्वातंत्र्य-संग्राम का सबसे महान आन्दोलन है। नेहरूजी इस बार अहमदनगर जेल में रख गय। यह उनकी अन्तिम जेल यात्रा थी। जैसा कि वे सदा करते थे, जेल में उन्होंने ख़ूब पढ़ा और लिखा और अपनी प्रसिद्ध पुस्तक, 'हिन्दुस्तान की कहानी' यहीं पर लिखी। इससे पहले भी वे जेल में 'विश्व इतिहास की झलक' जैसी प्रसिद्ध पुस्तक लिख चुके थे।

प्रधान मंत्री

आख़िर सन् ४६ में सरकार को झुकना पड़ा और वे जेल से छोड़ दिये गये। बाहर आकर उन्होंने पूर्ण रूप से १९४२ के विप्लव का समर्थन किया। वे पहले नेता थे, जिन्होंने डंके की चोट कहा कि १९४२ ई० में जो कुछ हुआ, उस पर मुझे गर्व है। इस आन्दोलन से राष्ट्र को वह अदम्य शक्ति और बहुमूल्य अवसर प्राप्त हुआ है, जिसकी हमें बड़ी आवश्यकता थी। अबतक देश और देश से बाहर आज़ादी के लिए इतना आन्दोलन हो चुका था कि सरकार घबरा उठी थी। देश से बाहर नेताजी सुभाषचन्द्र बोस ने आज़ाद हिन्द फ़ौज की स्थापना की थी। वे अंग्रेज़ों से लड़े और यद्यपि वे हार गये तो भी देश पर उसका बड़ा असर हुआ। नेहरूजी ने उस आन्दोलन के नेताओं को बचाने के लिए लोकमत जाग्रत किया और उनको फांसी क फन्द से बचाया। इस आन्दोलन का परिणाम यह

भी हुआ कि भारत की फ़ौज में भी विद्रोह शुरू होगया। आख़िर सरकार की ओर से तत्कालीन वाइसराय लार्ड वेवल ने समझौते की बात शुरू की। इङ्गलैण्ड से सर पैथिक लारेंस के नेतृत्व में एक और कमीशन आया। यह मार्च १९४६ की बात है। कई महीने तक बातें चलती रहीं। मुस्लिम लीग जो पाकिस्तान की मांग उठा रही थी, काफ़ी प्रवल होती जा रही थी। जिन्ना के नेतृत्व में उसने मिशन की स्कीम को अस्वीकार कर दिया, क्योंकि उसने पाकिस्तान को स्वीकार नहीं किया था। उधर कांग्रेस ने मिशन की योजना को स्वीकार कर लिया और केन्द्र में पहली बार मन्त्रि-मण्डल का निर्माण किया। नेहरूजी उस मंत्रि-मंडल के नेता थे। कुछ दिन बाद मुस्लिम लीग भी उसमें शामिल हो गई। लेकिन दुर्भाग्य से मुस्लिम लीग की राजनीति के कारण देश में हिन्दु मुस्लिम फ़िसाद बहुत तेज़ हो गए और चारों ओर रक्तपात होने लगा।

पूर्ण स्वतन्त्रता

मुस्लिम लीग वाले भारत की विधान सभा में भी शामिल नहीं हुए। नेहरूजी ने एक प्रस्ताव रखा, जिसमें भारत का लक्ष्य 'सर्व प्रभुत्व सम्पन्न प्रजातन्त्रात्मक गणराज्य' बताया गया था। अन्त में अंग्रेज़ों ने १५ अगस्त सन् १९४७ को भारत छोड़ने का निश्चय कर लिया। भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड माउण्टबैटन का इस निश्चय में बड़ा हाथ था। इस प्रकार देश स्वतन्त्र तो हुआ, लेकिन मुस्लिम लीग की राजनीति के कारण वह दो भागों में बंट गया। बंटवारे के बाद सीमाओं के दोनों ओर साम्प्रदायिक झगड़े और भयंकर हो गये। जवाहरलालजी को इन सब बातों से बहुत दुख हुआ और उन्होंने उनको शान्त करने के लिए पूरा प्रयत्न किया। उन्होंने बार-बार अपने जीवन को ख़तरे में डाला। जहां भी जा सकते थे, गये, जो भी कर सकते थे, किया।

भारत के स्वतन्त्र होने पर जो पहली सरकार बनी, उसके प्रथम प्रधान मंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू बने और आज तक वे ही इस पद पर काम कर रहे हैं। पाकिस्तान के कारण आरम्भ में उन्हें बहुत मुसीबतों का सामना करना पड़ा। दूसरा युद्ध समाप्त हुए अभी बहुत दिन नहीं हुए थे और उसके कारण देश में बेहद आर्थिक मंदी आ गई थी। खाने को अन्न नहीं मिल रहा था। फिर रक्तपात मचा हुआ था। इन सारी कठिनाइयों पर अपनी सूझबूझ तथा सरदार पटेल, राजेन्द्र बाबू, मौलाना आज़ाद जैसे साथियों की सहायता से और जनता के विश्वास से उन्होंने विजय प्राप्त की।

गांधीजी के वारिस

यह सब तो हुआ, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के ठीक बाद महात्मा गांधी की हत्या से उन्हें असीम पीड़ा हुई। रेडियो पर बोलते हुए उन्होंने ३० जनवरी १९४८ को रुन्धे गले से कहा, "आज हमारे जीवन का प्रकाश बुझ गया।" पार्लियामेन्ट में उन्होंने कहा "आज हमारी शान चली गई।" बत्तीस साल तक जिनसे उन्होंने प्रेरणा ली, जिनसे उन्होंने मानव-सेवा का पाठ पढ़ा, जो अंधकार के क्षणों में उनके अन्तर में प्रकाश बन कर आया, वही सहारा सहसा उनसे दूर हट गया और उस वक्त हटा जिस वक्त उसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। फिर भी उन्होंने साहस नहीं छोड़ा। सरदार पटेल, राजाजी और राजेन्द्र बाबू आदि साथियों के साथ मिलकर वे नये भारत का निर्माण करने में लग गये। वे सच्चे अर्थों में गांधीवादी नहीं हैं। उनका गांधीजी से मतभेद रहा है और उसे प्रकट करने से भी वे कभी चूके नहीं हैं फिर भी वे गांधीजी के सिद्धान्तों के इतने पास थे जितना और कोई नहीं था। गांधीजी ने राजेन्द्र बाबू और सरदार पटेल के रहते हुए उन्हें ही अपना राजनैतिक वारिस चुना और माना। वस्तुतः बापू उनमें भावी भारत की मूर्ति देखते थे।

वे समझ गये थे कि देश का भविष्य इन्हीं की कल्पनाओं के अनुसार बनने वाला है। उनमें पश्चिम के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, विवेकवाद, साम्यवाद और समाजवाद के साथ-साथ भारतीय आध्यात्मिक नैतिकता समन्वयात्मक संस्कृति का सुन्दर सामंजस्य हुआ है। वे कभी कभी खीजे और आवेश से परिपूर्ण लगते हैं, पर वास्तव में उनके अन्तर में मानवता का निर्मल स्रोत बहता है। वे निष्कपट और खरे व्यक्ति हैं। उनकी ईमानदारी ही उनकी शक्ति है और इसी कारण उन्होंने गांधीजी पर विजय प्राप्त की। उन्हें अपने विचारों के पास ले आए। वे दोनों असल में एक दूसरे के पूरक रहे। आज भी नेहरूजी की सफलता इसी नींव पर पनप रही है। इसीलिए बारबार सत्य और अहिंसा के नाम रटने वाले बापू के अनुयायियों की अपेक्षा वे सत्य और अहिंसा के अधिक समर्थक हैं। गांधीजी ने एक बार लिखा था "जवाहरलाल कहता है कि मेरी भाषा उसकी समझ में नहीं आती और कि उसकी भाषा मेरे लिए विदेशी है। इसमें सचाई हो या न हो, लेकिन भाषा हृदयों के मिलन में बाधा नहीं होती और मैं जानता हूँ कि जब मैं नहीं रहूँगा, जवाहरलाल मेरी भाषा बोलेगा।"

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि

नेहरूजी की सफलता का एक और कारण है उनकी अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि। जैसा आरम्भ में लिख चुके हैं, वे ऐसी भाषा बोलते हैं जिससे सारा विश्व समझता है। वे अनेक बार यूरोप में घूमे, रूस गये। स्पेन में जब गृहयुद्ध हुआ था, बम बरस रहे थे, पं० नेहरू बरसीलोना में मौजूद थे। जापान जब चीन को निगलने की कोशिश कर रहा था तब वे चीन भी गये। यही नहीं, मार्च १९४७ में उन्होंने एशिया के देशों का एक सम्मेलन दिल्ली में बुलाया। इसमें सारे एशिया से २५९ प्रतिनिधि आये थे। इसमें आपसी मतलब की, सांस्कृतिक, सामाजिक, राज-

नैतिक और आर्थिक सभी प्रकार की बातों पर विचार हुआ। इससे दुनिया में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ी। फिर जब इन्डोनेशिया की स्वतंत्रता का सवाल उठा, तो इस बारे में पं० नेहरू ने भारत में एक और सम्मेलन बुलाया। उसका परिणाम यह हुआ कि वह शीघ्र स्वतंत्र होगया। इसी प्रकार एशिया और अफ्रीका के देशों पर जब-जब संकट आया भारत ने राष्ट्र-संघ में उनका पक्ष लिया। नेहरूजी राष्ट्र-संघ के समर्थक हैं, पर वे अमेरीका या रूस किसी का एक पक्ष नहीं लेते। वे तो सत्य और न्याय का पक्ष लेते हैं। वे चीन के समर्थक हैं, क्योंकि वे जानते हैं कि चीन में जो वर्तमान शासन है, वह जनता के बल पर चल रहा है। उन्हीं की प्रेरणा से कोरिया का महानाश रुक सका है और वहां हमारी सेनायें युद्ध के लिये नहीं, बल्कि शान्ति की रक्षा के लिये गई थीं। यह ठीक है कि होगा वही जो रूस और अमेरिका चाहेंगे पर आवेश में आकर वे अनर्थ न कर बैठें, यह बात देखने के लिये भारत प्रयत्न करता ही रहा है और आगे भी करता रहेगा। वह तटस्थ है, पर निष्क्रिय नहीं। नेहरूजी के रहते पैसे के बल पर भय दिखाकर उसे ख़रीद लेना असम्भव है। सब इस बात को समझते हैं तभी १९५१ में जब पण्डितजी अमेरिका गये थे तो उनका ख़ूब स्वागत हुआ था।

नेहरूजी की परिश्रमशीलता

अपने देश में रियासतों का सवाल सरदार पटेल ने हल कर दिया था। काश्मीर का प्रश्न अभी राष्ट्रसंघ में पड़ा हुआ है। पाकिस्तान मित्र बना रहे, वह कलतक अपना ही तो अंग था, इसलिए पण्डित नेहरू जल्दी में कोई क़दम नहीं उठाना चाहते। हां, जब हैदराबाद ने सर उठाया तो उसे उन्होंने तुरन्त सीधा कर दिया। जहां तक अनाज का प्रश्न है, वह हल होगया है। कुछ ही वर्षों में बड़े-बड़े बांध पूरे हो जायंगे तो देश ख़ुश-हाल हो उठेगा। नया विधान बन गया है। नये चुनाव हो

चुके हैं। नई सरकार बन चुकी है। उसके प्रधान मंत्री वे ही हैं। उन्होंने बेकारी दूर करने के लिए भी प्रयत्न किया है। वे सचमुच बहुत मेहनत करते हैं। वे शायद ही कभी १ बजे रात से पहले सोते हों। कभी कभी तो वे दो ढ़ाई बजे तक काम करते रहते हैं। एक बजे तक लोगों को मिलने का वक्त देते हैं। यही नहीं, पण्डितजी १९५१ से कांग्रेस के सभापति भी हैं। उन्हीं दिनों चुनाव होने वाले थे। तब पण्डितजी आठ-आठ घंटा कांग्रेस कार्यालय में भी काम करते थे। उनके साथी घबरा उठे थे। श्रीप्रकाशजी ने तभी कहा था, "बाबा, जवाहरलालजी तो काम करने में भूत हैं, भूत। उन्हें न नींद चाहिए, न खाना चाहिए। पर हम लोगों को तो नींद और खाना ज़रूर चाहिए।"

नेहरूजी की दयालुता

इतना व्यस्त रहते हुए भी नेहरूजी की स्मृति बड़ी तेज़ है। हर किसी की मदद को वे सदा तैयार रहते हैं। जब वे मलाया जा रहे थे तो एक सज्जन ने उन्हें लिखा कि उसका पुत्र बीमार है, उसे जो दवा चाहिए, वह मलाया में ही मिल सकती है। कृपया वह दवा लेते आवें। मलाया में पण्डितजी बड़े व्यस्त रहे,परन्तु दवा लाना वे नहीं भूले। इसके अतिरिक्त वे कितनों ही की पैसे से और दूसरे प्रकार से सहायता करते रहते हैं, उनका हिसाब कौन रखता है। जब लालबहादुर शास्त्री उत्तरप्रदेश के गृहमंत्री थे, उस समय की एक घटना का उन्होंने वर्णन किया है,

"कांग्रेस की एक पुरानी कार्यकर्त्री मनिया देवी, जो कई बार जेल हो आई थीं, पिछली बार प्रयाग में जवाहरलालजी से मिलने आई और उनके सामने रोने लगीं। कहने लगीं कि आप लोगों ने हमें भुला दिया। जवाहरलालजी ने बड़े स्नेह से उन्हें उठाया और कहा, "भूलने की बात कैसे हो सकती है।" और फिर दिल्ली जाने से पहले मुझसे कहा कि इन तीनों के लिये जो कर सको, करना और मुझे लिख देना, सो मैं कुछ रकम इन

तीनों के लिए भेज दूंगा। मनिया देवी से पहले एक मुसलमान सज्जन और एक पुराने वार्डर इसी प्रकार पंडितजी से मिल चुके थे। इस प्रकार अनेक लोगों की वे सहायता करते ही रहते हैं।"

शक्ति का स्रोत

पंडितजी प्रधानमंत्री हैं, विदेशमंत्री हैं, योजना-आयोग के अध्यक्ष हैं, कांग्रेस के सभापति हैं, जनता के नेता हैं। वे संसद में व्यस्त रहते हैं, वे दौरा करते हैं, वे विदेशों के राजदूतों से मिलते हैं, वे सांस्कृतिक समारोहों में शामिल होते हैं। इतना सब करते हुए देखकर विदेशों से आनेवाले लोग चकित होकर सोचते हैं कि एक आदमी में यह सब करने की शक्ति कहां से आती है।

इसका उत्तर सीधा-सा है। उनकी शक्ति भारत की जनता का प्रेम है। जनता का प्रेम ही उनकी साधना की नींव है। इसके अतिरिक्त वे बच्चों को बड़ा प्यार करते हैं। अब तो उनका जन्म-दिन बाल-दिवस के रूप में मनाया जाता है और 'चाचा नेहरू' उस दिन बालकों की आंखों में भारत की भावी तस्वीर का दर्शन करते हैं। वे कैसे ही काम में क्यों न लगे हों, बच्चों के आते ही वे बच्चे बन जाते हैं। वे भारत के ही नहीं, विश्वभर के बच्चों को प्यार करते हैं।

राजनीति के अलावा जवाहरलाल साहित्य-प्रणेता भी हैं। विश्व इतिहास पर उन्होंने बड़ी पुस्तक लिखी है। अत्यधिक व्यस्त होते हुए भी वे पढ़ने लिखने के लिए थोड़ा बहुत समय निकाल ही लेते हैं। आज उनके लेखों और भाषणों के अनेक संग्रह उपलब्ध हैं। उनकी आत्मकथा 'मेरी कहानी' तो संसार की सबसे लोकप्रिय पुस्तकों में से है। विज्ञान उन्होंने ख़ूब पढ़ा है। कला से उन्हें प्रेम है। खेल-तमाशे, तैरना, घुड़सवारी, ये सब भी उन्हें पसन्द हैं। राजाजी के शब्दों में "जिस प्रकार महाभारत के युद्ध में "बाल कान्हा" ने अर्जुन का रथ हांका था

और उसे आसुरी प्रवृत्तियों पर विजय प्राप्त करने में समर्थ बनाया था, उसी प्रकार आज हमारा जवाहर राष्ट्र के रथ को समृद्धि की ओर ले जा रहा है" और गांधीजी के शब्दों में "देश उनके हाथों में सुरक्षित है।"

नेहरूजी की दिनचर्या

वे प्रातःकाल पांच बजे उठ जाते हैं। हाथ-मुंह धोकर कुछ व्यायाम करते हैं। शीर्षासन उन्हें बहुत प्रिय है। स्नान भी सुबह कर लेते हैं, इसमें उन्हें मुश्किल से पांच मिनट लगते हैं। फिर थोड़ा सा नाश्ता करके काम पर बैठ जाते हैं। दो-तीन घंटे आये हुए पत्रों के उत्तर लिखवाते हैं और फ़ाइलों को देखते हैं। क़रीब दस बजे वे बगीचे में आ जाते हैं और लोगों से मिलते हैं और बड़े ध्यान से उनके दुख दर्द की बातें सुनते हैं। इसके बाद वे अपने प्रधान सचिवालय चले जाते हैं। यहां वे अलग-अलग विभाग के सेक्रेटरियों के पास आये हुए ज़रूरी कागज़ों को देखते हैं और उत्तर लिखवाते हैं। फिर दोपहर को भोजन करते हैं और तीसरे पहर चाय के साथ कुछ फल व नमकीन चीज़ें ले लेते हैं। सांयकाल को मिलने वालों का फिर तांता लग जाता है। बीच-बीच में वे फ़ाइलें भी देखते रहते हैं, इस तरह रात के बारह या एक तो रोज़ाना बज ही जाते हैं। कभी-कभी तो रात के दो ढ़ाई बजे तक उत्तर लिखाते रहते हैं। इसके बाद वे सो जाते हैं और फिर सुबह पांच बजे उठ जाते हैं। सूर्य की अखण्ड गति की भांति उनका यह साधनापूर्ण जीवन निरन्तर चलता है। यही कारण है कि पेंसठ वर्ष की अवस्था में भी वे इतना परिश्रम कर लेते हैं।

बड़े भाग्य से देश को ऐसे महान् नेता मिले हैं। भगवान उनको दीर्घायु करें।

उनके जीवन की कुछ विशेषताएं

जनता के कष्टों का ध्यान

प्रयाग में कमला नेहरू अस्पताल के एक नवीन खंड के उद्घाटन के जलसे में भारत के बहुत से प्रतिष्ठित व्यक्ति और नेता आये थे। साधारण जनता दीवारों पर, पेड़ों पर और जहां भी जगह मिली, जलसा देखने के लिए खड़ी हुई थी। नेहरूजी आये और उन्होंने देखा कि लोग दीवारों और वृक्षों पर बड़े कष्ट से खड़े हुए हैं। फ़ौरन ही उन्होंने सबको अंदर मैदान की तरफ़ आने को कहा और वे स्वयं भीड़ में घुस गये और बच्चों और स्त्रियों को बैठाने लगे।

नींद की झपकी

एक बार श्री केशवदेव मालवीय नेहरूजी से मिलने आये। उन्हें ऐसा लगा कि जैसे वे सोकर उठे हैं। उन्होंने पूछा कि क्या आप सोरहे थे? नेहरूजी ने कहा कि अभी पन्द्रह मिनट की झपकी ली थी। उन्होंने यह भी बताया कि कभी कभी वे ऐसी ही नींद की झपकी पांच-दस मिनट के लिए ले लेते हैं और फिर ताज़े होकर काम में लग जाते हैं।

तूफ़ानी दौरे

चुनाव के दिनों की बात है। पांच दिन के भारत के दौरे में नेहरूजी ने चार हज़ार मील का चक्कर लगाया, लगभग साठ सभाओं द्वारा चालीस लाख भारतवासियों को कांग्रेस का संदेश सुनाया। दक्षिण भारत के तीन दिन के दौरे में ३२ घंटे सफ़र में रहे, बीस घंटे पैरों पर खड़े व्याख्यान देते रहे और शेष २० घंटे उनको सोने, खाने-पीने आदि के लिये मिले।

नेहरूजी की वाणी

मेरी महत्वाकांक्षा

मेरी अभी भी एक महत्वाकांक्षा है। वह यह कि अब जो कुछ भी मेरा जीवन शेष है, उसमें मैं अपनी पूरी बची शक्ति और पूरी क्षमता के साथ भारत के पुर्ननिर्माण में लगा रहूँ। जबतक मैं ख़त्म नहीं हो जाता और ख़त्म हो जाने वाली चीज़ों के ढ़ेर में नहीं फेंक दिया जाता तबतक मैं ज़ोर से इस काम को करता रहना चाहता हूँ। मुझे इसकी तनिक भी चिन्ता नहीं है कि आप या दूसरे लोग मेरे बारे में मेरी मृत्यु के बाद क्या सोचेंगे? मेरे लिए तो बस इतना ही काफ़ी है कि मैंने अपने को, अपनी शक्ति और क्षमता को भारत की सेवा में खपा दिया। मुझे इसकी भी परवाह नहीं है कि मेरे बाद मेरी प्रतिष्ठा क्या होगी, पर मेरे बाद यदि कुछ लोग मेरे बारे में सोचें तो मैं चाहूँगा कि वे कहें—"यह एक ऐसा आदमी था जो अपने पूरे दिल और दिमाग़ से हिन्दुस्तान से और हिन्दुस्तानियों से प्रेम करता था और हिन्दुस्तानी लोग भी उसके दोषों को हमेशा भुलाकर उससे बेहद प्यार करते थे।"

गलत साधन साध्य को बिगाड़ देंगे

मेरा यह भी विश्वास है कि हमारा साध्य और उसे प्राप्त करने के लिए अपनाये गये साधनों में बहुत पास का और गहरा सम्बन्ध है। साध्य के सही होने पर भी अगर साधन ग़लत हों तो वे साध्य को बिगाड़ देंगे या उसे ग़लत दिशा में मोड़ देंगे। इस तरह साधन और साध्य में गहरा और अटूट सम्बन्ध है, वे एक दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते। वास्तव में पुराने ज़माने के महापुरुषों ने हमें यह सबक़ सिखाया है, लेकिन दुर्भाग्य से वह बिरले मौकों पर ही याद रक्खा जाता है।

··मेरे देश के महान् नेता महात्मा गांधी, जिनकी प्रेरणा और प्रेम की छाया में मैं बड़ा हुआ, हमेशा नैतिक मूल्यों पर ज़ोर देते थे और इस बात की सावधानी रखने को कहा करते थे कि साधनों को साध्य के अधीन कभी न बनाया जाय। हम उनके योग्य वारिस नहीं हैं, फिर भी यथाशक्ति उनके उपदेशों पर चलने की कोशिश करते हैं। हम एक हद तक ही उनके उपदेशों पर चल सके हैं, फिर भी उसके बहुत अच्छे परिणाम निकले हैं।

हिन्दुस्तान को अपने दिल का तारा बनावें

हिन्दुस्तान आज आगे बढ़ रहा है और पुराना ढ़ांचा बदल रहा है। बहुत दिनों तक हम दूसरों की कठपुतली बने, ज़माने की रफ़तार को बेबस बने देखते रहे। आज हमारी जनता के हाथ में ताक़त आ गई है और अब हम अपना इतिहास अपनी इच्छा के अनुकूल बना सकेंगे। आइये, हम सब मिलकर इस महान् कार्य में जुटें और हिन्दुस्तान को अपने दिल का तारा बनावें—वह हिन्दुस्तान जो दुनिया में महान् और शान्ति तथा प्रगति के कामों में सबसे आगे होगा। द्वार खुला है और भविष्य हम सबको बुला रहा है। हार और जीत का तो सवाल ही नहीं उठता, क्योंकि हम सबको मिलकर साथियों की तरह आगे बढ़ना है। या तो सबकी साथ ही जीत होगी, नहीं तो सब ही गड्ढ़े में गिरेंगे।

रूस के परिश्रम व त्याग का अनुकरण करो

लोग बड़ी बड़ी बातें करते हैं कि रूस में यह हालत है और वहां यह होता है, लेकिन वे यह नहीं देखते कि रूस उन्नति के मार्ग पर तभी अग्रसर हो सका है जब वहां के लोग उसे स्मृद्ध बनाने में तन मन-धन से जुट गये थे और उसके लिये १५—२० साल तक फ़ाके भी किये, अधपेट भी रहे। लोग कोरी बातें करना छोड़दें, दूसरे देशों का अनुकरण परिश्रम व त्याग में करना चाहिए। जबतक इस विशाल देश के सब निवासी एक

होकर और सच्चे दिल से अधिक सम्पत्ति पैदा करने के लिए तत्पर नहीं होंगे और उसकी वृद्धि को बनाये नहीं रखेंगे तबतक देश आगे नहीं बढ़ सकता और ग़रीबों की हालत नहीं सुधर सकती।

खादी और ग्रामोद्योग

हममें से बहुतों ने खादी में विश्वास किया है और उसको बहुत वर्षों से पहनते आये हैं। आज़ादी की लड़ाई के दिनों में हमारे लिए यह स्वतन्त्रता की वर्दी थी, साथ ही इसकी वजह से हम भारत के सामान्य नागरिकों की सतह पर पहुंच जाते थे, जिनकी भलाई ही हमारी सब कोशिशों का ध्येय है। हमारा देश, बदकिस्मती से, बहुत-सी अलग अलग जाति पांति होने के कारण काफ़ी तकलीफ़ उठा चुका है। ये जाति पांति के भेद आज भी जारी हैं और हमारे राजनैतिक और सामाजिक जीवन को नुक़सान पहुंचाते रहते हैं।

पुराने ज़माने से चली आने वाली इस जाति पांति के अलावा हमारे सामाजिक जीवन में आर्थिक असमानता के कारण और भी फ़र्क मौजूद हैं। इससे छुटकारा पाना ही हमारा उद्देश्य रहता है। इसी बात की ओर भारतीय संविधान ने अपनी राज्य-नीति के निर्देशक तत्वों पर ज़ोर दिया है। वह बहुत बड़ा सवाल है जिसके अर्थ यह हैं कि हमको अपने तमाम सामाजिक ढ़ाचे में बुनियादी तब्दीलियां करनी होंगी। हम ज़रूर उस तरफ़ बढ़ रहे हैं, मगर हमारी रफ़्तार काफ़ी तेज़ नहीं मालूम पड़ती।

जो हो, कुछ ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें हममें से हर कोई कर सकता है, और ऐसी ही एक चीज़ यह है कि हम सब खादी पहनें और इस्तेमाल करें,और इस तरह, कम-से कम कपड़ों के उस बाहरी फ़र्क को दूर करें जो आज समृद्ध व्यक्तियों तथा ग़रीबों में अन्तर करता है। खादी कम से कम इतना तो करती ही है कि वह हमारे अन्दर अपने देश की विशाल जनता के

साथ एकरूपता की भावना पैदा करती है। खादी से भाईचारे का वायुमंडल पैदा होता है।

इसके अलावा इससे सीमित रूप में बेरोज़गारी के मसले को हल करने में भी कुछ सहायता मिलती है। मैं यह नहीं कहता कि खादी के पहनने से ही बेरोज़गारी का मसला हल हो जायगा, पर इससे कुछ तो मदद हो ही जाती है, और इसी के साथ हमारे अन्दर बराबर यह विचार बना रहता है कि हमारे ऊपर बेरोज़गारी के मसले को हल करने की ज़िम्मेदारी है।

आज लोगों को और अधिक रोज़गार-धन्धा दिलाना हम सब के लिये एक बड़ा मसला हो गया है। इससे हमको कई मोर्चों पर लड़ना होगा। पर यह अधिकाधिक स्वीकार किया जाने लगा है कि इस मसले को हल करने का एक बड़ा तरीक़ा यह है कि हम ग्रामीण और छोटे-मोटे उद्योगों को बढ़ावा दें।

खादी हमारे मुख्य ग्रामीण उद्योगों में से एक है। और खादी महज़ उस स्वतन्त्रता का चिन्ह ही नहीं है जिसके लिए हमने संघर्ष किया और जिसे हमने जीता, पर साथ ही यह इस बात का भी चिन्ह है कि हमारी सारी जनता में समान प्रकार की दोस्ती की भावना रहनी चाहिए और आज की सब विषमताओं को दूर होना चाहिए।

इसलिए हम सब को चाहिए कि हम खादी पहनें, और हर तरीक़े स उसे प्रोत्साहन दें। यह काम हम सबका है, हमारा चाहे जो दर्जा हो, और हम चाहे जो काम करते हों, चाहे हम सरकारी आदमी हों या गैर-सरकारी आदमी हों।

आगे बढ़ते चलो

हमारा रास्ता तय है, पर मंजिल आसान नहीं है। हम यह भी तो सोचें कि हम पहले भी मुश्किल रास्ते पार करते रहे हैं।

हमें फिर से वही पुरानी हिम्मत और वही पुरानी आदत लानी है जिससे ख़ुदी और ख़ुद के बुरे-भले को भूलकर मुश्किलों से बिना घबराए हुए, उत्साह से आगे बढ़ते जायं। मैं सबसे प्रार्थना करता हूँ कि हिम्मत रखो और देश के भविष्य में विश्वास रखकर आगे बढ़ते चलो।

इतिहास की पुकार

हमारी सबसे बड़ी मुसीबत यह रही है कि लोग मज़हब, जात बिरादरी और सूबों के अलग-अलग खानों में बन्द रहे हैं। जब अंग्रेज़ी राज्य से हमारा युद्ध चल रहा था तो गांधीजी ने सबसे बड़ा सबक हमें यह दिया था कि हम इन अलग अलग खानों में ही न पड़े रहें, बल्कि मिलकर काम करें और सब अपने को उस बड़े समाज के हिस्सेदार समझें जो राष्ट्र कहलाता है। क़ौमियत के मानी भी यही हैं कि आप चाहे किसी भी मज़हब या सूबे से सम्बन्ध रखते हैं और पेशा भी चाहे कोई भी करते हैं, मगर सब अपने को एक ही राष्ट्र का अंग समझें।

हिमालय से लेकर कन्याकुमारी तक हिन्दुस्तान के कितने ही रूप और कितनी ही तस्वीरें हैं। अनेक भाषाएं और अनेक रहन-सहन हैं, मगर ये सब मिलकर भारत बनता है। बदनसीबी यह है कि हम एक क़ौम को, जो बढ़ती हुई आई है और जिसमें कितनी ही बाहर और अन्दर की संस्कृतियां खप गई हैं, पहचानने से इन्कार करते हैं।

हिन्दुस्तान का इतिहास पुकार-पुकार कर कह रहा है कि जबजब हमने धर्म, मज़हब और जाति के नारे लगाये,तब-तब हम कमज़ोर ही हुए। इसलिए यदि हमें मुल्क को ताक़तवर बनाना है तो इस बात से सबक हांसिल करना होगा और उसकी जड़ और बुनियाद मज़बूती से एक क़ौमियत की भावना पर क़ायम रखनी होगी।

रोशनी की तलाश

मैं रोशनी देखने की कोशिश करता हूँ और उसकी तलाश करता रहता हूँ कभी-कभी ठोकर खाकर गिर भी पड़ता हूँ, पर फिर उठकर आगे बढ़ता हूँ। मैं तलाश करता रहता हूँ कि मेरे अन्दर क्या-क्या दोष हैं और यह जानने की कोशिश करता हूँ कि मेरी जनता और मेरा देश मुझसे क्या चाहता है ?

मुमकिन है कि हम आज इतिहास के एक मोड़ पर पहुंच गये हैं। इतिहास अब अलग अलग मुल्कों का जुदा-जुदा इतिहास नहीं रह गया है। अब तो सारे मानव-समाज का एक इतिहास है। हम सब एक दूसरे से बंधे हुए हैं।

हिन्दुस्तान में और मुल्कों की तरह रोशनी तेज़ी से चमकी थी। हमारे महान् देश ने न ख़ुद तेज़ रोशनी देखी, बल्कि उसे दूसरे देशों में वहां के अंधेरे को दूर करने के लिये भेजा। बुद्ध और महावीर ने जो संदेश ढ़ाई हज़ार साल पहले दिया था, वह महज़ इस मुल्क के लिए या ऐशिया महाद्वीप के लिए ही नहीं, बल्कि सारे संसार के लिए प्रकाश था।

कांग्रेस को मज़बूत बनाइये

कांग्रेस आज भी देश की उन्नति और एकता के लिए सब से बड़ी शक्ति है। यह भारतीय जनता की अपनी चीज़ है और उसने ही उसको शक्तिशाली बनाया है।

मैं समाजवाद चाहता हूँ परन्तु नारे लगा देने से ही कोई लाभ नहीं है। हमें इसके लिए काम करना होगा। समस्या यह है कि अमीरों और ग़रीबों के बीच का अन्तर कैसे दूर किया जाय। यह काम नारे लगाने और क़ानून बना देने से पूरा नहीं हो सकता है बल्कि इसके लिए हमें समूचे ढ़ांचे को ही बदलना होगा, जैसा कि कांग्रेस आहिस्ता आहिस्ता कर रही है।

कांग्रेस ग़रीबों, पददलितों और साधारण जनता की थी, है और रहेगी। कांग्रेस में अगर कुछ ख़राबियां पैदा हो गई हैं तो आप और हम सब मिलकर उनको दूर करें।

शानदार देश की शानदार बुनियाद

हिन्दुस्तान की समस्यायों पर विचार करते समय हमें सारे एशिया की तस्वीर को सामने रखना चाहिए। जब मैं उस तस्वीर को देखता हूँ तो मुझे निराशा नहीं होती। इन पांच सालों में एक मज़बूत व शानदार बुनियाद हमने डाली है, जिस पर कि हम अपने मुल्क की शानदार इमारत खड़ी कर सकेंगे। यह बुनियाद इन्सानों की है, उनके दिल व दिमाग़ों की है और आपस में सहयोग से काम करने की है।

हमारे देश में तीन तरह के लोग रहते हैं। एक तो वे जो अपने तजुरबे से फ़ायदा उठाते हैं, दूसरे वे जो दूसरों के तजुरबे से फ़ायदा उठाते हैं और तीसरे वे जो किसी के भी तजुरबे से फ़ायदा नहीं उठाते। ये न तो देश के इतिहास को समझते हैं और न आजकल के सवालों को। जिन बातों ने हमारे देश को कमज़ोर किया, उन्हीं बातों को ये अपनाते रहते हैं। इस तरह के लोगों से सब को सावधान रहना चाहिए।

हमारी असली ताक़त

हमारे लिए बहुत ज़रूरी है कि ज़रा हम पीछे देखें कि कौनसी चीज़ें, हमें कमज़ोर करती थीं जिन्होंने हिन्दुस्तान को गिराया और ग़ुलाम बनाया और क्या चीज़ें थी जिन्होंने फिर हिन्दुस्तान को उठाया, हमारी ताक़तें बढ़ाई और आख़िर हमें आज़ाद किया। कुछ लोग समझते हैं कि हम आज़ाद हो गये तो हमारा काम पूरा हो गया, अब हम आपस में जो चाहें करें— चाहे हम आपस में लड़ाई भी लड़ें या और तरह से अपनी शक्ति

का अपव्यय करें। यह ग़लत बात है। याद रखिये, आज़ादी एक ऐसी चीज़ है कि जिस वक्त गफ़लत में पड़े, वह फ़िसल जायगी, वह ख़तरे में पड़ जायगी और ख़ासकर आजकल की दुनिया में। आजकल की दुनिया बड़ी ख़तरनाक है। वह रहम नहीं खाती, कमज़ोर की तरह जो कमज़ोर मुल्क है, वह गिरता है। मुल्क की ताक़त होती है, उसकी फ़ौज, उसका सामान, उसके हवाई जहाज़ और उसके बहादुर नौजवान, पर उससे भी बड़ी ताक़त होती है मुल्क के लोगों के दिल और दिमाग़। अगर वे छोटी-छोटी बातों में न पड़कर बड़ी-बड़ी बातों की तरफ़ देखते हैं और आपस में मेल रखते हैं, सहयोग देते हैं तो मुल्क की ताक़त बढ़ती है, फ़ौज के हौंसले बढ़ते हैं। फिर कोई दूसरा देश उसकी तरफ़ आंख उठाकर नहीं देख सकता। जहां काम की बजाय आराम ज़्यादा हुआ, वहां क़ौम कमज़ोर हुई। साम्प्रदायिकता, ऊंचनीच की भावना, क़ौमी सवालों में मज़हब का दख़ल, प्रान्तीयता की भावना आदि ऐसी बातें हैं जो क़ौम को कमज़ोर बनाती है, इन बातों से जनता को सावधान रहना चाहिए।

विश्व शांति की ओर

इस दुनिया में कोई भी हमारा शत्रु नहीं है। हम सभी के साथ, भले ही उनके व्यवहार कभी कभी हमारे लिए अच्छे साबित न हों, मित्रता चाहते हैं। हमारा विचार है कि सही कोशिशों से कभी न कभी सही नतीजा ज़रूर निकलेगा। हमारा विचार है कि जो लोग शांति के लिए कोशिश कर रहे हैं वे शांति का वातावरण पैदा करने में अवश्य कामयाब होंगे। मैं अच्छी तरह जानता हूं कि भारत के पास जिसने अभी हाल में ही अपनी आज़ादी हांसिल की है, कोई फ़ौजी ताक़त नहीं है। हमारी आवाज़ कोई बुलन्द आवाज़ नहीं है। हमारी आवाज़ विनम्र और शिष्ट है, क्योंकि यही भारत की

परम्परा है। मेरा विश्वास है कि विनम्र आवाज़ अधिक प्रभावशाली होती है।

मेरे विचार से शांन्ति के हेतु कोशिश करने का हमारे लिए अत्यन्त अनुकूल समय अब आ गया है। हमने सशस्त्र शक्ति की धमकियाँ और उनके जवाब में दी गयीं धमकियां सुनी हैं। मुझे यक़ीन है कि हर बुद्धिमान आदमी मानता है कि लड़ाई से कोई मसला हल नहीं होता। मेरी समझ में, अब समय आ गया है कि लोग लड़ाई के डर, सन्देह और धमकियों को छोड़ दें और शान्ति और सहयोग की कला की ओर अपना ध्यान लगायें। मुझे पूरी उम्मीद है कि शान्ति के लिए बढ़ाये गये हाथों को दूसरों का सहयोग अवश्य मिलेगा।

समाजवादी ढांचे से ही मानव की शान्तिपूर्ण प्रगति संभव सबकी भलाई में अपनी भलाई समझो

एक समाजवादी ढांचा ही ऐसा ढांचा है जो कि सभी वर्ग-संघर्षों के आधार को मिटा सकता है तथा जिसके द्वारा ही शान्ति पूर्ण तरीक़ों से मानव जाति की प्रगति हो सकती है। हम एक ऐसे युग में प्रवेश कर रहे हैं जोकि शनैः शनैः भूतकाल से भिन्न होता जा रहा है, अतः हमारे विचार का तरीक़ा भी भिन्न होना चाहिये। उसे तेज़ी से बदलती हुई दुनिया के अनुकूल रखना चाहिये, साथ ही जन साधारण के हित के दृष्टि-कोण पर आधारित होना चाहिये।

हमें असमानताओं को केवल इसलिये ही दूर नहीं करना है कि ऐसा करना अच्छा है, बल्कि इसलिये कि और कोई हल व्यावहारिक नहीं है। यदि विश्व को अपना अस्तित्व बनाये रखना है तो शांतिपूर्ण तरीके ज़रूरी हैं, चाहे वे राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्रों में हों या राजनैतिक या आर्थिक समस्याओं के हल में।

हिन्दी साहित्य मंदिर अजमेर
में मिलनेवाली पुस्तकें

१.	गांधी चित्रावली	(१०० चित्र)	१)
२.	नेहरू चित्रावली	(८६ चित्र)	१)
३.	विनोबा चित्रावली	(५६ चित्र)	।।।)
४.	रामनाम की महिमा	(म० गांधी)	१)
५.	तपोधन विनोबा	(बड़ी जीवनी)	१।।)
६.	विश्व की महान महिलाएँ	(सचित्र)	१।।)
७.	स्कूल में फलबाग़		१।।।)

पं० नेहरू जी लिखित

८.	विश्व इतिहास की झलक	२१)
९.	हिन्दुस्तान की कहानी (संक्षिप्त)	५)
१०.	हिन्दुस्तान की समस्याएं	२।।)
११.	पिता के पत्र पुत्री के नाम	।।।)
१२.	लड़खड़ाती दुनिया	२)
१३.	मेरी कहानी	८)
१४.	राजनीति से दूर	२।।)
१५.	राष्ट्रपिता	२)
१६.	हमारी समस्याएं और उनका हल	१)

एक रुपया